2 सलातीन

[illegible]

1 सलातीन और 2 सलातीन की किताब असल में एक किताब थीं — जबकि यहूदी रिवायत नबी यर्मयाह को 2 सलातीन का मुसन्निफ़ मानते हैं — हाल के कलाम के आलिम व फ़ाज़िल एक गुमनाम मुसन्निफों की जमाअत के बीच के काम के लिए मंसूब करते हैं जिन्हें इसतिस्नाकरक कहते हैं — 2 सलातीन की किताब इसतिसना के मौज़ूअ का पीछा करती है: ख़ुदा की फर्मानबर्दारी बरकतें लें आती हैं जबकि नाफ़रमानी ख़ुदा की ला' नतें ले आती हैं।

[illegible]

इस किताब की तसनीफ़ तारीख़ तकरीबन 590 - 538 क़बल मसीह है।

इसे तब लिखा गया जब हैकल — ए — सुलेमानी मौजूद था (1 सलातीन 8:8)।

[illegible]

बनी इस्राईल और तमाम कलाम के क़ारिईन।

[illegible]

2 स्लातीन की किताब पहला सलातीन की किताब का खातिम: है — यह किताब (इस्राईल और यहूदिया) की तक़सीम शुद:सलतनत के बादशाहों की कहानियाँ जारी रखती है 2 सलातीन की किताब बनी इस्राईल और यहूदा की आख़री शिकस्त और असीरिया और बाबुल में की जिलावतनी पर ख़तम होती है।

[illegible]

इन्तशार

बैरूनी ख़ाका

1. इलीशा नबी की ख़िदमत गुज़ारी — 1:1-8:29
2. अख़ीअब की नसल का ख़ात्मा — 9:1-11:21
3. योआश से लेकर इस्राईल के ख़ात्मे तक — 12:1-17:41
4. हिज़िकयाह से लेकर यहूदा के ख़ात्मे तक — 18:1-25:30

???????? ?? ?????? ????????? ?? ????? ????

1 अख़ीअब के मरने के बाद मोआब इस्राईल से बाग़ी हो गया।
2 और अख़ज़ियाह उस झिलमिली दार खिड़की में से, जो
सामरिया में उसके बालाख़ानें में थी, गिर पड़ा और बीमार हो
गया। इसलिए उसने क़ासिदों को भेजा और उनसे ये कहा, "जाकर
अक़रून के मा'बूद बा'लज़बूब' से पूछो, कि मुझे इस बीमारी से
शिफ़ा हो जाएगी या नहीं।"
3 लेकिन ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते ने एलियाह तिशबी से कहा,
उठ और सामरिया के बादशाह के क़ासिदों से मिलने को जा और
उनसे कह, 'क्या इस्राईल में ख़ुदा नहीं जो तुम अक़रून के मा'बूद
बा'लज़बूब से पूछने चले हो?
4 इसलिए अब ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "तू उस पलंग पर
से, जिस पर तू चढ़ा है, उतरने न पाएगा, बल्कि तू ज़रूर मरेगा।"
तब एलियाह रवाना हुआ।
5 वह क़ासिद उसके पास लौट आए, तब उसने उनसे पूछा,
"तुम लौट क्यूँ आए?"
6 उन्होंने उससे कहा, एक शख़्स हम से मिलने को आया, और
हम से कहने लगा, 'उस बादशाह के पास जिसने तुम को भेजा है
फिर जाओ, और उससे कहो: ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "क्या
इस्राईल में कोई ख़ुदा नहीं जो तू अक़रून के मा'बूद बा'लज़बूब
से पूछने को भेजता है? इसलिए तू उस पलंग से, जिस पर तू चढ़ा
है, उतरने न पाएगा, बल्कि ज़रूर ही मरेगा।"

7 उसने उनसे कहा, “उस शख़्स की कैसी शक्ल थी, जो तुम से
मिलने को आया और तुम से ये बातें कहीं?”
8 उन्होंने उसे जवाब दिया, “वह बहुत बालों वाला आदमी था,
और चमड़े का कमरबन्द अपनी कमर पर कसे हुए था।” तब उसने
कहा, “ये तो एलियाह तिशबी है।”
9 तब बादशाह ने पचास सिपाहियों के एक सरदार को, उसके
पचासों सिपाहियों के साथ उसके पास भेजा। जब वह उसके पास
गया और देखा कि वह एक टीले की चोटी पर बैठा है। उसने उससे
कहा, ऐ नबी, बादशाह ने कहा है, “तू उतर आ।”
10 एलियाह ने उस पचास के सरदार को जवाब दिया, “अगर
मैं नबी हूँ, तो आग आसमान से नाज़िल हो और तुझे तेरे पचासों
के साथ जला कर भसम कर दे।” तब आग आसमान से नाज़िल
हुई, और उसे उसके पचासों के साथ जला कर भसम कर दिया।
11 फिर उसने दोबारा पचास सिपाहियों के दूसरे सरदार को,
उसके पचासों सिपाहियों के साथ उसके पास भेजा। उसने उससे
मुख़ातिब होकर कहा, ऐ नबी, बादशाह ने यूँ कहा है, “जल्द उतर
आ।”
12 एलियाह ने उनको भी जवाब दिया, “अगर मैं नबी हूँ,
तो आग आसमान से नाज़िल हो और तुझे तेरे पचासों के साथ
जलाकर भसम कर दे।” फ़िर ख़ुदा की आग आसमान से नाज़िल
हुई, और उसे उसके पचासों के साथ जला कर भसम कर दिया।
13 फिर उसने तीसरे पचास सिपाहियों के सरदार को, उसके
पचासों सिपाहियों के साथ भेजा; और पचास सिपाहियों का ये
तीसरा सरदार ऊपर चढ़कर एलियाह के आगे घुटनों के बल गिरा,
और उसकी मिन्नत करके उससे कहने लगा, “ऐ नबी, मेरी जान
और इन पचासों की जानें, जो तेरे ख़ादिम हैं, तेरी निगाह में
क़ीमती हों।
14 देख, आसमान से आग नाज़िल हुई और पचास सिपाहियों

के पहले दो सरदारों को उनके पचासों समेत जला कर भसम कर
दिया; इसलिए अब मेरी जान तेरी नज़र में क़ीमती हो।”
15 तब ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते ने एलियाह से कहा, “उसके साथ
नीचे जा, उससे न डर।” तब वह उठकर उसके साथ बादशाह के
पास नीचे गया,
16 और उससे कहा, ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, “तूने जो अक़रून
के मा'बूद बा'लज़बूब से पूछने को लोग भेजे हैं, तो क्या इसलिए
कि इस्राईल में कोई ख़ुदा नहीं है जिसकी मर्ज़ी को तू दरियाफ़्त
कर सके? इसलिए तू उस पलंग से, जिस पर तू चढ़ा है, उतरने न
पाएगा, बल्कि ज़रूर ही मरेगा।”
17 इसलिए वह ख़ुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ जो एलियाह
ने कहा था, मर गया; और चूँकि उसका कोई बेटा न था, इसलिए
शाह — ए — यहूदाह यहूराम — बिन — यहूसफ़त के दूसरे
साल से यहूराम उसकी जगह सल्तनत करने लगा।
18 और अख़ज़ियाह के और काम जो उसने किए, क्या वह
इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं?

2

[illegible]

1 और जब ख़ुदावन्द एलियाह को शोले में आसमान पर उठा
लेने को था, तो ऐसा हुआ कि एलियाह इलीशा' को साथ लेकर
जिलजाल से चला,
2 और एलियाह ने इलीशा' से कहा, “तू ज़रा यहीं ठहर जा,
इसलिए कि ख़ुदावन्द ने मुझे बैतएल को भेजा है।” इलीशा' ने
कहा, “ख़ुदावन्द की हयात की क़सम और तेरी जान की क़सम, मैं
तुझे नहीं छोड़ूँगा।” इसलिए वह बैतएल को चले गए।
3 और अम्बियाज़ादे जो बैतएल में थे, इलीशा' के पास आकर
उससे कहने लगे कि “क्या तुझे मा'लूम है कि ख़ुदावन्द आज तेरे

सिर से तेरे आक़ा को उठा लेगा?" उसने कहा, "हाँ, मैं जानता हूँ;
तुम चुप रहो।"

4 एलियाह ने उससे कहा, "इलीशा', तू ज़रा यहीं ठहर
जा, क्यूँकि ख़ुदावन्द ने मुझे यरीहू को भेजा है।" उसने कहा,
"ख़ुदावन्द की हयात की क़सम और तेरी जान की क़सम, मैं तुझे
नहीं छोड़ूँगा।" इसलिए वह यरीहू में आए।

5 और अम्बियाज़ादे जो यरीहू में थे, इलीशा' के पास आकर
उससे कहने लगे, "क्या तुझे मा'लूम है कि ख़ुदावन्द आज तेरे
आक़ा को तेरे सिर से उठा लेगा?" उसने कहा, "हाँ, मैं जानता हूँ;
तुम चुप रहो।"

6 और एलियाह ने उससे कहा, "तू ज़रा यहीं ठहर जा, क्यूँकि
ख़ुदावन्द ने मुझ को यरदन भेजा है।" उसने कहा, "ख़ुदावन्द की
हयात की क़सम और तेरी जान की क़सम, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा।"
इसलिए वह दोनों आगे चले।

7 और अम्बियाज़ादों में से पचास आदमी जाकर उनके सामने
दूर खड़े हो गए; और वह दोनों यरदन के किनारे खड़े हुए।

8 और एलियाह ने अपनी चादर को लिया, और उसे लपेटकर
पानी पर मारा और पानी दो हिस्से होकर इधर — उधर हो गया;
और वह दोनों ख़ुश्क ज़मीन पर होकर पार गए।

9 और जब वह पार गए तो एलियाह ने इलीशा' से कहा, "इससे
पहले कि मैं तुझ से ले लिया जाऊँ, बता कि मैं तेरे लिए क्या
करूँ।" इलीशा' ने कहा, "मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तेरी रूह का
दूना हिस्सा मुझ पर हो।"

10 उसने कहा, "तू ने मुश्किल सवाल किया; तोभी अगर तू
मुझे अपने से जुदा होते देखे, तो तेरे लिए ऐसा ही होगा; और
अगर नहीं, तो ऐसा न होगा।"

11 और वह आगे चलते और बातें करते जाते थे, कि देखो, एक

आग का रथ और आग के घोड़ों ने उन दोनों को जुदा कर दिया,
और एलियाह शोले में आसमान पर चला गया।
12 इलीशा' ये देखकर चिल्लाया, ऐ मेरे बाप, मेरे बाप!
इस्राईल के रथ, और उसके सवार! "और उसने उसे फिर न देखा,
तब उसने अपने कपड़ों को पकड़कर फाड़ डाला और दो हिस्से
कर दिए।
13 और उसने एलियाह की चादर को भी, जो उस पर से गिर
पड़ी थी उठा लिया, और उल्टा फिरा और यरदन के किनारे खड़ा
हुआ।
14 और उसने एलियाह की चादर को, जो उस पर से गिर पड़ी
थी, लेकर पानी पर मारा और कहा, ख़ुदावन्द एलियाह का ख़ुदा
कहाँ है?" और जब उसने भी पानी पर मारा, तो वह इधर — उधर
दो हिस्से हो गया और इलीशा' पार हुआ।
15 जब उन अम्बियाज़ादों ने जो यरीहू में उसके सामने थे, उसे
देखा तो वह कहने लगे, "एलियाह की रूह इलीशा' पर ठहरी हुई
है।" और वह उसके इस्तक़बाल को आए और उसके आगे ज़मीन
तक झुककर उसे सिज्दा किया।
16 और उन्होंने उससे कहा, "अब देख, तेरे ख़ादिमों के साथ
पचास ताक़तवर जवान हैं, ज़रा उनको जाने दे कि वह तेरे आक़ा
को ढूँढें, कहीं ऐसा न हो कि ख़ुदावन्द की रूह ने उसे उठाकर किसी
पहाड़ पर या किसी जंगल में डाल दिया हो।" उसने कहा, "मत
भेजो।"
17 जब उन्होंने उससे बहुत ज़िद की, यहाँ तक कि वह शर्मा
भी गया, तो उसने कहा, "भेज दो।" इसलिए उन्होंने पचास
आदमियों को भेजा, और उन्होंने तीन दिन तक ढूँढा पर उसे न
पाया।
18 और वह अभी यरीहू में ठहरा हुआ था; जब वह उसके पास
लौटे, तब उसने उनसे कहा, "क्या मैंने तुमसे न कहा था कि न
जाओ?"

[illegible]

19 फिर उस शहर के लोगों ने इलीशा' से कहा, “ज़रा देख, ये
शहर क्या अच्छे मौक़े' पर है, जैसा हमारा ख़ुदावन्द ख़ुद देखता
है; लेकिन पानी ख़राब और ज़मीन बंजर हैं।”
20 उसने कहा, “मुझे एक नया प्याला ला दो, और उसमें नमक
डाल दो।” वह उसे उसके पास ले आए।
21 और वह निकल कर पानी के चश्मे पर गया, और वह नमक
उसमें डाल कर कहने लगा, “ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मैने इस
पानी को ठीक कर दिया है, अब आगे को इससे मौत या बंजरपन
न होगा।”
22 देखो इलीशा' के कलाम के मुताबिक़ जो उसने फ़रमाया,
वह पानी आज तक ठीक है
23 वहाँ से वह बैतएल को चला, और जब वह रास्ते में जा रहा
था तो उस शहर के छोटे लड़के निकले, और उसे चिढ़ाकर कहने
लगे, “चढ़ा चला जा, ऐ गंजे सिर वाले: चढ़ा चला जा, ऐ गंजे
सिर वाले।”
24 और उसने अपने पीछे नज़र की, और उनको देखा और
ख़ुदावन्द का नाम लेकर उन पर ला'नत की; इसलिए जंगल में से
दो रीछनियाँ निकली, और उन्होंने उनमें से बयालीस बच्चे फाड़
डाले।
25 वहाँ से वह कर्मिल पहाड़ को गया, फिर वहाँ से सामरिया
को लौट आया।

3

[illegible]

1 और शाह — ए — यहूदाह यहूसफ़त के अठारहवें बरस से
अख़ीअब का बेटा यहूराम सामरिया में इस्राईल पर बादशाहत
करने लगा, और उसने बारह साल बादशाहत की।

2 और उसने ख़ुदावन्द के ख़िलाफ़ गुनाह किया; लेकिन अपने
बाप और अपनी माँ की तरह नहीं, क्यूँकि उसने बा'ल के उस सुतून
को जो उसके बाप ने बनाया था दूर कर दिया।
3 तोभी वह नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे
उसने इस्राईल से गुनाह कराया था लिपटा रहा, और उनसे अपने
आपको अलग न किया।
4 मोआब का बादशाह मीसा बहुत भेड़ बकरियाँ रखता था, और
इस्राईल के बादशाह को एक लाख बर्रों और एक लाख मेंढों की
ऊन देता था।
5 लेकिन जब अख़ीअब मर गया, तो मोआब का बादशाह
इस्राईल के बादशाह से बाग़ी हो गया।
6 उस वक़्त यहूराम बादशाह ने सामरिया से निकलकर सारे
इस्राईल का जाएज़ा लिया।
7 और उसने जाकर यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त से पुछवा
भेजा,' "मोआब का बादशाह मुझ से बाग़ी हो गया है; इसलिए
क्या तू मोआब से लड़ने के लिए मेरे साथ चलेगा?" उसने जवाब
दिया, "मैं चलूँगा; क्यूँकि जैसा मैं हूँ। वैसा ही तू है, और जैसे मेरे
लोग वैसे ही तेरे लोग, और जैसे मेरे घोड़े वैसे ही तेरे घोड़े हैं।"
8 तब उसने पूछा, "हम किस रास्ते से जाएँ?" उसने जवाब
दिया, "अदोम के रास्ते से।"
9 चुनाँचे इस्राईल के बादशाह और यहूदाह के बादशाह और
अदोम के बादशाह निकले; और उन्होंने सात दिन की मन्ज़िल
का चक्कर काटा, और उनके लश्कर और चौपायों के लिए, जो
पीछे पीछे आते थे, कहीं पानी न था।
10 और इस्राईल के बादशाह ने कहा, "अफ़सोस कि ख़ुदावन्द
ने इन तीन बादशाहों को इकट्ठा किया है, ताकि उनको मोआब के
बादशाह के हवाले कर दे।"
11 लेकिन यहूसफ़त ने कहा, "क्या ख़ुदावन्द के नबियों में से

कोई यहाँ नहीं है, ताकि उसके वसीले से हम ख़ुदावन्द की मर्ज़ी
मा'लूम करें?" और इस्राईल के बादशाह के ख़ादिमों में से एक ने
जवाब दिया, "इलीशा' — बिन — साफ़त यहाँ है, जो एलियाह
के हाथ पर पानी डालता था।"
12 यहूसफ़त ने कहा, "ख़ुदावन्द का कलाम उसके साथ है।"
तब इस्राईल के बादशाह और यहूसफ़त और अदोम के बादशाह
उसके पास गए।
13 तब इलीशा' ने इस्राईल के बादशाह से कहा, "मुझ को तुझ
से क्या काम? तू अपने बाप के नबियों और अपनी माँ के नबियों
के पास जा।" पर इस्राईल के बादशाह ने उससे कहा, "नहीं, नहीं,
क्यूँकि ख़ुदावन्द ने इन तीनों बादशाहों को इकट्ठा किया है, ताकि
उनको मोआब के हवाले कर दे।"
14 इलीशा' ने कहा, "रब्ब — उल — अफ़वाज की हयात की
क़सम, जिसके आगे मैं खड़ा हूँ, अगर मुझे यहूदाह के बादशाह
यहूसफ़त की हुज़ूरी के नज़दीक न होता, तो मैं तेरी तरफ़ नज़र
भी न करता और न तुझे देखता।
15 लेकिन ख़ैर, किसी बजाने वाले को मेरे पास लाओ।" और
ऐसा हुआ कि जब उस बजाने वाले ने बजाया, तो ख़ुदावन्द का
हाथ उस पर ठहरा।
16 तब उसने कहा, "ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, इस जंगल में
ख़न्दक़ ही ख़न्दक़ खोद डालो।
17 क्यूँकि ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, 'तुम न हवा आती देखोगे
और न पानी आते देखोगे, तोभी ये वादी पानी से भर जाएगी,
और तुम भी पियोगे और तुम्हारे मवेशी और तुम्हारे जानवर भी।
18 और ये ख़ुदावन्द के लिए एक हल्की सी बात है; वह
मोआबियों को भी तुम्हारे हाथ में कर देगा।
19 और तुम हर फ़सीलदार शहर और उम्दा शहर क़ब्ज़ा लोगे,
और हर अच्छे दरख़्त को काट डालोगे, और पानी के सब चश्मों

को भर दोगे, और हर अच्छे खेत को पत्थरों से ख़राब कर दोगे।"
20 इसलिए सुबह को क़ुर्बानी पेश करने के वक़्त ऐसा हुआ, कि
अदोम की राह से पानी बहता आया और वह मुल्क पानी से भर
गया।
21 जब सब मोआबियों ने ये सुना कि बादशाहों ने उनसे लड़ने
के लिए चढ़ाई की है, तो वह सब जो हथियार बाँधने के क़ाबिल
थे, और उम्र दराज़ भी, इकट्ठे होकर सरहद पर खड़े हो गए;
22 और वह सुबह सवेरे उठे और सूरज पानी पर चमक रहा था,
और मोआबियों को वह पानी जो उनके सामने था, ख़ून की तरह
सुर्ख़ दिखाई दिया।
23 तब वह कहने लगे, "ये तो ख़ून है; वह बादशाह यक़ीनन
हलाक हो गए हैं, और उन्होंने आपस में एक दूसरे को मार दिया
है। इसलिए अब ऐ मोआब, लूट को चल।"
24 जब वह इस्राईल की लश्करगाह में आए, तो इस्राईलियों
ने उठकर मोआबियों को ऐसा मारा कि वह उनके आगे से भागे;
पर वह आगे बढ़ कर मोआबियों को मारते मारते उनके मुल्क' में
घुस गए।
25 और उन्होंने शहरों को गिरा दिया, और ज़मीन के हर अच्छे
ख़ित्ते' पर सभी ने एक एक पत्थर डालकर उसे भर दिया, और
उन्होंने पानी के सब चश्मे बन्द कर दिए, और सब अच्छे दरख़्त
काट डाले, सिर्फ़ हरासत के पहाड़ ही के पत्थरों को बाक़ी छोड़ा,
पर गोफ़न चलाने वालों ने उसको भी जा घेराऔर उसे मारा।
26 जब मोआब के बादशाह ने देखा कि जंग उसके लिए
निहायत सख़्त हो गई, तो उसने सात सौ तलवार वाले मर्द अपने
साथ लिए, ताकि सफ़ चीर कर अदोम के बादशाह तक जा पहुँचे;
पर वह ऐसा न कर सके।
27 तब उसने अपने पहलौठे बेटे को लिया, जो उसकी जगह
बादशाह होता, और उसे दीवार पर सोख़्तनी क़ुर्बानी के तौर पर
पेश किया। यूँ इस्राईल पर बड़ा ग़ज़ब हुआ; तब वह उसके पास

से हट गए और अपने मुल्क को लौट आए।

4

[illegible]

1 और अम्बियाज़ादों की बीवियों में से एक 'औरत ने इलीशा'
से फ़रियाद की और कहने लगी, “तेरा ख़ादिम मेरा शौहर मर
गया है, और तू जानता है कि तेरा ख़ादिम ख़ुदावन्द से डरता था;
इसलिए अब क़र्ज़ देने वाला आया है कि मेरे दोनों बेटों को ले
जाए ताकि वह ग़ुलाम बनें।”
2 इलीशा' ने उससे कहा, “मैं तेरे लिए क्या करूँ? मुझे बता,
तेरे पास घर में क्या है?” उसने कहा, “तेरी ख़ादिमा के पास घर
में एक प्याला तेल के 'अलावा कुछ भी नहीं।”
3 तब उसने कहा, “तू जा, और बाहर से अपने सब पड़ोसियों
से बर्तन उजरत पर ले, वह बर्तन ख़ाली हों, और थोड़े बर्तन न
लेना।
4 फिर तू अपने बेटों को साथ लेकर अन्दर जाना और पीछे से
दरवाज़ा बन्द कर लेना, और उन सब बर्तनों में तेल उँडेलना, और
जो भर जाए उसे उठा कर अलग रखना।”
5 तब वह उसके पास से गई, और उसने अपने बेटों को अन्दर
साथ लेकर दरवाज़ा बन्द कर लिया; और वह उसके पास लाते
जाते थे और वह उँडेलती जाती थी।
6 जब वह बर्तन भर गए तो उसने अपने बेटे से कहा, “मेरे पास
एक और बर्तन ला।” उसने उससे कहा, “और तो कोई बर्तन रहा
नहीं।” तब तेल बन्द हो गया।
7 तब उसने आकर मर्द — ए — ख़ुदा को बताया। उसने कहा,
“जा, तेल बेच, और क़र्ज़ अदा कर, और जो बाक़ी रहे उससे तू
और तेरे बेटे गुज़ारा करें।”
8 एक रोज़ ऐसा हुआ कि इलीशा' शूनीम को गया, वहाँ एक
दौलतमन्द 'औरत थी; और उसने उसे रोटी खाने पर मजबूर

किया। फिर तो जब कभी वह उधर से गुज़रता, रोटी खाने के लिए
वहीं चला जाता था।
9 इसलिए उसने अपने शौहर से कहा, "देख, मुझे मा'लूम होता
है कि ये मर्द — ए — ख़ुदा, जो अकसर हमारी तरफ़ आता है,
मुक़द्दस है।
10 हम उसके लिए एक छोटी सी कोठरी दीवार पर बना दें, और
उसके लिए एक पलंग और मेज़ और चौकी और चराग़दान लगा
दें, फिर जब कभी वह हमारे पास आए तो वहीं ठहरेगा।"
11 फिर एक दिन ऐसा हुआ कि वह उधर गया और उस कोठरी
में जाकर वहीं सोया।
12 फिर उसने अपने ख़ादिम जेहाज़ी से कहा, "इस शूनीमी
'औरत को बुला ले।" उसने उसे बुला लिया और वह उसके सामने
खड़ी हुई।
13 फिर उसने अपने ख़ादिम से कहा, "तू उससे पूछ कि तूने जो
हमारे लिए इस क़दर फ़िक्रें कीं, तो तेरे लिए क्या किया जाए?
क्या तू चाहती है कि बादशाह से, या फ़ौज के सरदार से तेरी
सिफ़ारिश की जाए?" उसने जवाब दिया, "मैं तो अपने ही लोगों
में रहती हूँ।"
14 फिर उसने कहा, "उसके लिए क्या किया जाए?" तब
जेहाज़ी ने जवाब दिया, "सच उसके कोई बेटा नहीं, और उसका
शौहर बुड्ढा है।"
15 तब उसने कहा, "उसे बुला ले।" और जब उसने उसे बुलाया,
तो वह दरवाज़े पर खड़ी हुई।
16 तब उसने कहा, "मौसम — ए — बहार में, वक़्त पूरा होने
पर तेरी गोद में बेटा होगा।" उसने कहा, "नहीं, ऐ मेरे मालिक!
ऐ मर्द — ए — ख़ुदा, अपनी ख़ादिमा से झूठ न कह।"
17 फिर वह 'औरत हामिला हुई और जैसा इलीशा' ने उससे
कहा था, मौसम — ए — बहार में वक़्त पूरा होने पर उसके बेटा

हुआ।

18 जब वह लड़का बढ़ा, तो एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपने
बाप के पास खेत काटनेवालों में चला गया।
19 और उसने अपने बाप से कहा, हाय मेरा सिर, हाय मेरा सिर!
“उसने अपने ख़ादिम से कहा, 'उसे उसकी माँ के पास ले जा।”
20 जब उसने उसे लेकर उसकी माँ के पास पहुँचा दिया, तो वह
उसके घुटनों पर दोपहर तक बैठा रहा, इसके बाद मर गया।
21 तब उसकी माँ ने ऊपर जाकर उसे मर्द — ए — ख़ुदा के
पलंग पर लिटा दिया, और दरवाज़ा बन्द करके बाहर गई।
22 और उसने अपने शौहर से पुकार कर कहा, “जल्द जवानों में
से एक को, और गधों में से एक को मेरे लिए भेज दे, ताकि मैं मर्द
— ए — ख़ुदा के पास दौड़ जाऊँ और फिर लौट आऊँ।”
23 उसने कहा, “आज तू उसके पास क्यूँ जाना चाहती है? आज
न तो नया चाँद है न सब्त।” उसने जवाब दिया, “अच्छा ही
होगा।”
24 और उसने गधे पर ज़ीन कसकर अपने ख़ादिम से कहा,
“चल, आगे बढ़; और सवारी चलाने में सुस्ती न कर, जब तक
मैं तुझ से न कहूँ।”
25 तब वह चली और वह कर्मिल पहाड़ को मर्द — ए — ख़ुदा
के पास गई। उस मर्द — ए — ख़ुदा ने दूर से उसे देखकर अपने
ख़ादिम जेहाज़ी से कहा, देख, उधर वह शूनीमी 'औरत है।
26 अब ज़रा उसके इस्तक़बाल को दौड़ जा, और उससे पूछ,
'क्या तू ख़ैरियत से है? तेरा शौहर ख़ैरियत से, बच्चा ख़ैरियत से
है?' “उसने जवाब दिया, ठीक नहीं है।”
27 और जब वह उस पहाड़ पर मर्द — ए — ख़ुदा के पास आई,
तो उसके पैर पकड़ लिए, और जेहाज़ी उसे हटाने के लिए नज़दीक
आया, पर मर्द — ए — ख़ुदा ने कहा, “उसे छोड़ दे, क्यूँकि उसका
दिल परेशान है, और ख़ुदावन्द ने ये बात मुझ से छिपाई और मुझे

न बताई।"
28 और वह कहने लगी, क्या मैंने अपने मालिक से बेटे का
सवाल किया था? क्या मैंने न कहा था, "मुझे धोका न दे'?"
29 तब उसने जेहाज़ी से कहा, "कमर बाँध, और मेरी लाठी हाथ
में लेकर अपना रास्ता ले; अगर कोई तुझे रास्ते में मिले तो उसे
सलाम न करना, और अगर कोई तुझे सलाम करे तो जवाब न
देना; और मेरी लाठी उस लड़के के मुँह पर रख देना।"
30 उस लड़के की माँ ने कहा, "ख़ुदावन्द की हयात की क़सम
और तेरी जान की क़सम, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगी।" तब वह उठ कर
उसके पीछे — पीछे चला।
31 और जेहाज़ी ने उनसे पहले आकर लाठी को उस लड़के के
मुँह पर रखा; पर न तो कुछ आवाज़ हुई, न सुना। इसलिए वह
उससे मिलने को लौटा, और उसे बताया, "लड़का नहीं जागा।"
32 जब इलीशा' उस घर में आया, तो देखो, वह लड़का मरा
हुआ उसके पलंग पर पड़ा था।
33 तब वह अकेला अन्दर गया, और दरवाज़ा बन्द करके
ख़ुदावन्द से दुआ की।
34 और ऊपर चढ़कर उस बच्चे पर लेट गया; और उसके मुँह
पर अपना मुँह, और उसकी आँखों पर अपनी आँखें, और उसके
हाथों पर अपने हाथ रख लिए, और उसके ऊपर लेट गया; तब
उस बच्चे का जिस्म गर्म होने लगा।
35 फिर वह उठकर उस घर में एक बार टहला, और ऊपर चढ़कर
उस बच्चे के ऊपर लेट गया; और वह बच्चा सात बार छींका और
बच्चे ने आँखें खोल दीं।
36 तब उसने जेहाज़ी को बुला कर कहा, "उस शूनीमी 'औरत
को बुला ले।" तब उसने उसे बुलाया, और जब वह उसके पास
आई, तो उसने उससे कहा, "अपने बेटे को उठा ले।"
37 तब वह अन्दर जाकर उसके क़दमों पर गिरी और ज़मीन पर
सिज्दे में हो गई; फिर अपने बेटे को उठा कर बाहर चली गई।

38 और इलीशा' फिर जिलजाल में आया, और मुल्क में काल
था, और अम्बियाज़ादे उसके सामने बैठे हुए थे। और उसने अपने
ख़ादिम से कहा, "बड़ी देग चढ़ा दे, और इन अम्बियाज़ादों के
लिए लप्सी पका।"
39 और उनमें से एक खेत में गया कि कुछ सब्ज़ी चुन लाए। तब
उसे कोई जंगली लता मिल गई। उसने उसमें से इन्द्रायन तोड़कर
दामन भर लिया और लौटा, और उनको काटकर लप्सी की देग में
डाल दिया, क्यूँकि वह उनको पहचानते न थे।
40 चुनाँचे उन्होंने उन मर्दों के खाने के लिए उसमें से ऊँडेला।
और ऐसा हुआ कि जब वह उस लप्सी में से खाने लगे, तो चिल्ला
उठे और कहा, "ऐ मर्द — ए — ख़ुदा, देग में मौत है!" और वह
उसमें से खा न सके।
41 लेकिन उसने कहा, "आटा लाओ।" और उसने उस देग में
डाल दिया और कहा, "उन लोगों के लिए उंडेलो, ताकि वह
खाएँ।" फ़िर देग में कोई मुज़िर चीज़ बाक़ी न रही।
42 बाल सलीसा से एक शख़्स आया, और पहले फ़सल की
रोटियाँ, या'नी जौ के बीस गिर्दे और अनाज की हरी — हरी बाले
मर्द ए — ख़ुदा के पास लाया, उसने कहा, "इन लोगों को दे दे,
ताकि वह खाएँ।"
43 उसके ख़ादिम ने कहा, "क्या मैं इतने ही को सौ आदमियों
के सामने रख दूँ?" फिर उसने फिर कहा, लोगों को दे दे, ताकि वह
खाएँ; क्यूँकि ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, "वह खाएँगे और उसमें से
कुछ छोड़ भी देंगे।"
44 तब उसने उसे उनके आगे रख्खा और उन्होंने खाया; और
जैसा ख़ुदावन्द ने फ़रमाया था, उसमें से कुछ छोड़ भी दिया।

5

[illegible]

1 अराम के बादशाह के लश्कर का सरदार ना'मान, अपने
आक़ा के नज़दीक मु'अज़्ज़िज़ — 'इज़्ज़तदार शख़्स था; क्यूँकि
ख़ुदावन्द ने उसके वसीले से अराम को फ़तह बख़्शी थी। वह
ज़बरदस्त सूर्मा भी था, लेकिन कोढ़ी था।
2 और अरामी दल बाँधकर निकले थे, और इस्राईल के मुल्क
में से एक छोटी लड़की को क़ैद करके ले आए थे; वह ना'मान की
बीवी की ख़ादमा थी।
3 उसने अपनी बीबी से कहा, "काश मेरा आक़ा उस नबी के
यहाँ होता, जो सामरिया में है! तो वह उसे उसके कोढ़ से शिफ़ा
दे देता।"
4 तो किसी ने अन्दर जाकर अपने मालिक से कहा, "वह लड़की
जो इस्राईल के मुल्क की है, ऐसा — ऐसा कहती है।"
5 तब अराम के बादशाह ने कहा, "तू जा, और मैं इस्राईल के
बादशाह को ख़त भेजूँगा।" तब वह रवाना हुआ, और दस क़िन्तार
चाँदी और छ: हज़ार मिस्क़ाल सोना और दस जोड़े कपड़े अपने
साथ ले लिए।
6 और वह उस ख़त को इस्राईल के बादशाह के पास लाया
जिसका मज़मून ये था, "ये ख़त जब तुझको मिले, तो जान लेना
कि मैंने अपने ख़ादिम ना'मान को तेरे पास भेजा है, ताकि तू उसके
कोढ़ से उसे शिफ़ा दे।"
7 जब इस्राईल के बादशाह ने उस ख़त को पढ़ा, तो अपने कपड़े
फाड़कर कहा, "क्या मैं ख़ुदा हूँ कि मारूँ और जिलाऊँ, जो ये शख़्स
एक आदमी को मेरे पास भेजता है कि उसको कोढ़ से शिफ़ा दूँ?
इसलिए अब ज़रा ग़ौर करो, देखो, कि वह किस तरह मुझ से
झगड़ने का बहाना ढूँढता है।"
8 जब मर्द — ए — ख़ुदा इलीशा' ने सुना कि इस्राईल के
बादशाह ने अपने कपड़े फाड़े, तो बादशाह को कहला भेजा, "तूने
अपने कपड़े क्यूँ फाड़े? अब उसे मेरे पास आने दे, और वह जान
लेगा कि इस्राईल में एक नबी है।"

9 तब ना'मान अपने घोड़ों और रथों के साथ आया, और
इलीशा' के घर के दरवाज़े पर खड़ा हुआ,
10 और इलीशा' ने एक क़ासिद के ज़रिए' कहला भेजा, "जा
और यरदन में सात बार ग़ोता मार, तो तेरा जिस्म फिर बहाल हो
जाएगा और तू पाक साफ़ होगा।"
11 पर ना'मान नाराज़ होकर चला गया और कहने लगा, "मुझे
यक़ीन था कि वह निकल कर ज़रूर मेरे पास आएगा, और खड़ा
होकर ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से दुआ करेगा, और उस जगह के
ऊपर अपना हाथ इधर — उधर हिला कर कोढ़ी को शिफ़ा देगा।
12 क्या दमिश्क़ के दरिया, अबाना और फ़रफ़र, इस्राईल की
सब नदियों से बढ़ कर नहीं हैं? क्या मैं उनमें नहाकर पाक साफ़
नहीं हो सकता?" इसलिए वह लौटा और बड़े ग़ुस्से में चला गया।
13 तब उसके मुलाज़िम पास आकर उससे यूँ कहने लगे, "ऐ
हमारे बाप, अगर वह नबी कोई बड़ा काम करने का हुक्म तुझे
देता, तो क्या तू उसे न करता? इसलिए जब वह तुझ से कहता है
कि नहा ले और पाक साफ़ हो जा, तो कितना ज़्यादा इसे मानना
चाहिए?"
14 तब उसने उतरकर नबी के कहने के मुताबिक़ यरदन में सात
ग़ोते लगाए, और उसका जिस्म छोटे बच्चे के जिस्म की तरह हो
गया और वह पाक साफ़ हुआ।
15 फिर वह अपनी जिलौ के सब लोगों के साथ नबी के पास
लौटा, और उसके सामने खड़ा हुआ और कहने लगा, "देख, अब
मैंने जान लिया कि इस्राईल को छोड़ और कहीं इस ज़मीन पर
कोई ख़ुदा नहीं। इसलिए अब करम फ़रमाकर अपने ख़ादिम का
तोहफ़ा क़ुबूल कर।"
16 लेकिन उसने जवाब दिया, "ख़ुदावन्द की हयात की क़सम
जिसके आगे मैं खड़ा हूँ, मैं कुछ नहीं लूँगा।" और उसने उससे
बहुत मजबूर किया कि ले, पर उसने इन्कार किया।

17 तब ना'मान ने कहा, “अच्छा, तो मैं तेरी मिन्नत करता हूँ,
कि तेरे ख़ादिम को दो ख़च्चरों का बोझ मिट्टी दी जाए' क्यूँकि
तेरा ख़ादिम अब से आगे ख़ुदावन्द के सिवा किसी ग़ैर — मा'बूद
के सामने न तो सोख़्तनी क़ुर्बानी न ज़बीहा पेश करेगा।
18 तब इतनी बात में ख़ुदावन्द तेरे ख़ादिम को मु'आफ़ करे, कि
जब मेरा आक़ा इबादत करने को रिम्मोन के बुतख़ाने में जाए और
वह मेरे हाथ का सहारा ले, और मैं रिम्मोन के बुतख़ाने में सिज्दे
में जाऊँ; तो जब मैं रिम्मोन के बुतख़ाने में सिज्दे में हो जाऊँ, तो
ख़ुदावन्द इस बात में तेरे ख़ादिम को मु'आफ़ करे।”
19 उसने उससे कहा, “सलामती जा।” तब वह उससे रुख़्सत
होकर थोड़ी दूर निकल गया।
20 लेकिन उस नबी इलीशा' के ख़ादिम जेहाज़ी ने सोचा, “मेरे
आक़ा ने अरामी ना'मान को यूँ ही जाने दिया कि जो कुछ वह
लाया था उससे न लिया; इसलिए ख़ुदावन्द की हयात की क़सम,
मैं उसके पीछे दौड़ जाऊँगा और उससे कुछ न कुछ लूँगा।”
21 तब जेहाज़ी ना'मान के पीछे चला। जब ना'मान ने देखा,
कि कोई उसके पीछे दौड़ा आ रहा है, तो वह उससे मिलने को रथ
पर से उतरा और कहा, “ख़ैर तो है?”
22 उसने कहा, “सब ख़ैर है! मेरे मालिक ने मुझे ये कहने को
भेजा है कि देख, अम्बियाज़ादों में से अभी दो जवान इफ़्राईम के
पहाड़ी मुल्क से मेरे पास आ गए हैं; इसलिए ज़रा एक क़िन्तार
चाँदी, और दो जोड़े कपड़े उनके लिए दे दे।”
23 ना'मान ने कहा, “ख़ुशी से दो क़िन्तार ले।” और वह उससे
बज़िद हुआ, और उसने दो क़िन्तार चाँदी दो थैलियों में बाँधी और
दो जोड़े कपड़ों के साथ उनको अपने दो नौकरों पर लादा, और वह
उनको लेकर उसके आगे — आगे चले।
24 और उसने टीले पर पहुँचकर उनके हाथ से उनको ले लिया
और घर में रख दिया, और उन मर्दों को रुख़्सत किया, तब वह चले
गए।

25 लेकिन ख़ुद अन्दर जाकर अपने आक़ा के सामने खड़ा हो
गया। इलीशा' ने उससे कहा, “जेहाज़ी, तू कहाँ से आ रहा है?”
उसने कहा, “तेरा ख़ादिम तो कहीं नहीं गया था।”
26 उसने उससे कहा, क्या मेरा दिल उस वक़्त तेरे साथ न था,
जब वह शख़्स तुझ से मिलने को अपने रथ पर से लौटा? क्या
रुपये लेने, और पोशाक, और ज़ैतून के बाग़ों और ताकिस्तानों
और भेड़ों और ग़ुलामों, और लौंडियों के लेने का ये वक़्त है?
27 इसलिए ना'मान का कोढ़ तुझे और तेरी नस्ल को हमेशा
लगा रहेगा। इसलिए वह बर्फ़ की तरह सफ़ेद कोढ़ी होकर उसके
सामने से चला गया।

6

[illegible]

1 और अम्बियाज़ादों ने इलीशा' से कहा, “देख, ये जगह जहाँ
हम तेरे सामने रहते हैं, हमारे लिए छोटी है;
2 इसलिए हम को ज़रा यरदन को जाने दे कि हम वहाँ से एक
एक कड़ी लेकर आएँ और अपने रहने के लिए एक घर बना सकें।”
उसने जवाब दिया, “जाओ।”
3 तब एक ने कहा, “मेहरबानी से अपने ख़ादिमों के साथ चल।”
उसने कहा, “मैं चलूँगा।”
4 चुनाँचे वह उनके साथ गया, और जब वह यरदन पर पहुँचे
तो लकड़ी काटने लगे।
5 लेकिन एक की कुल्हाड़ी का लोहा, जब वह कड़ी काट रहा
था, पानी में गिर गया। तब वह चिल्ला उठा, और कहने लगा,
“हाय, मेरे मालिक! यह तो माँगा हुआ था।”
6 नबी ने कहा, “वह किस जगह गिरा?” उसने उसे वह जगह
दिखाई। तब उसने एक छड़ी काट कर उस जगह डाल दी, और
लोहा तैरने लगा।

7 फिर उसने कहा, "अपने लिए उठा ले।" तब उसने हाथ बढ़ाकर उसे उठा लिया।

[illegible]

8 अराम का बादशाह, इस्राईल के बादशाह से लड़ रहा था; और उसने अपने ख़ादिमों से मशवरा किया कि "मैं इन जगह पर डेरा डालूँगा।"

9 इसलिए मर्द — ए — ख़ुदा ने इस्राईल के बादशाह से कहला भेजा कि "ख़बरदार तू उन जगहों से मत गुज़रना, क्यूँकि वहाँ अरामी आने को हैं।"

10 और इस्राईल के बादशाह ने उस जगह, जिसकी ख़बर मर्द — ए — ख़ुदा ने दी थी और उसको आगाह कर दिया था, आदमी भेजे और वहाँ से अपने को बचाया, और यह सिर्फ़ एक या दो बार ही नहीं।

11 इस बात की वजह से अराम के बादशाह का दिल निहायत बेचैन हुआ; और उसने अपने ख़ादिमों को बुलाकर उनसे कहा, "क्या तुम मुझे नहीं बताओगे कि हम में से कौन इस्राईल के बादशाह की तरफ़ है?"

12 तब उसके ख़ादिमों में से एक ने कहा, "नहीं, ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह! बल्कि इलीशा', जो इस्राईल में नबी है, तेरी उन बातों को जो तू अपनी आरामगाह में कहता है, इस्राईल के बादशाह को बता देता है।"

13 उसने कहा, "जाकर देखो वह कहाँ है, ताकि मैं उसे पकड़वाऊँ।" और उसे यह बताया गया, "वह दूतैन में है।"

14 तब उसने वहाँ घोड़ों और रथों, और एक बड़े लश्कर को रवाना किया; तब उन्होंने रातों रात आकर उस शहर को घेर लिया।

15 जब उस मर्द — ए — ख़ुदा का ख़ादिम सुबह को उठ कर बाहर निकला तो देखा, कि एक लश्कर घोड़ों के साथ और रथों

के शहर के चारों तरफ़ है। तब उस ख़ादिम ने जाकर उससे कहा,
“हाय! ऐ मेरे मालिक, हम क्या करें?”
16 उसने जवाब दिया, “ख़ौफ़ न कर, क्यूँकि हमारे साथ वाले
उनके साथ वालों से ज़्यादा हैं।”
17 और इलीशा' ने दुआ की और कहा, “ऐ ख़ुदावन्द, उसकी
आँखें खोल दे ताकि वह देख सके।” तब ख़ुदावन्द ने उस जवान
की आँखें खोल दीं, और उसने जो निगाह की तो देखा कि इलीशा'
के चारों तरफ़ का पहाड़ आग के घोड़ों और रथों से भरा है।
18 और जब वह उसकी तरफ़ आने लगे, तो इलीशा' ने ख़ुदावन्द
से दुआ की और कहा, “मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, इन लोगों को
अन्धा कर दे।” इसलिए उसने जैसा इलीशा' ने कहा था, उनको
अन्धा कर दिया।
19 फिर इलीशा' ने उनसे कहा, “यह वह रास्ता नहीं और न ये
वह शहर है, तुम मेरे पीछे चले आओ, और मैं तुम को उस शख़्स के
पास पहुँचा दूँगा जिसकी तुम तलाश करते हो।” और वह उनको
सामरिया को ले गया।
20 जब वह सामरिया में पहुँचे तो इलीशा' ने कहा, “ऐ
ख़ुदावन्द, इन लोगों की आँखें खोल दे, ताकि वह देख सके।” तब
ख़ुदावन्द ने उनकी आँखें खोल दीं, उन्होंने जो निगाह की, तो क्या
देखा कि सामरिया के अन्दर हैं।
21 और इस्राईल के बादशाह ने उनको देखकर इलीशा' से कहा,
“ऐ मेरे बाप, क्या मैं उनको मार लूँ? मैं उनको मार लूँ?”
22 उसने जवाब दिया, “तू उनको न मार। क्या तू उनको मार
दिया करता है, जिनको तू अपनी तलवार और कमान से क़ैद कर
लेता है? तू उनके आगे रोटी और पानी रख, ताकि वह खाएँ —
पिएँ और अपने मालिक के पास जाएँ।”
23 तब उसने उनके लिए बहुत सा खाना तैयार किया; और जब
वह खा पी चुके तो उसने उनको रुख़्सत किया, और वह अपने

मालिक के पास चले गए। और अराम के गिरोह इस्राईल के मुल्क
में फिर न आए।
24 इसके बाद ऐसा हुआ कि बिनहदद, अराम, का बादशाह
अपनी सब फ़ौज इकट्ठी करके चढ़ आया और सामरिया का घेरा
कर लिया।
25 और सामरिया में बड़ा काल था, और वह उसे घेरे रहे, यहाँ
तक कि गधे का सिर चाँदी के अस्सी सिक्कों में और कबूतर की
बीट का एक चौथाई पैमाना' चाँदी के पाँच सिक्कों में बिकने लगा।
26 जब इस्राईल का बादशाह दीवार पर जा रहा था, तो एक
'औरत ने उसकी दुहाई दी और कहा, "ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह,
मदद कर।"
27 उसने कहा, "अगर ख़ुदावन्द ही तेरी मदद न करे, तो मैं कहाँ
से तेरी मदद करूँ? क्या ख़लिहान से, या अंगूर के कोल्हू से?"
28 फिर बादशाह ने उससे कहा, "तुझे क्या हुआ?" उसने जवाब
दिया, इस 'औरत ने मुझसे कहा, 'अपना बेटा दे दे, ताकि हम
आज के दिन उसे खाएँ; और मेरा बेटा जो है, फिर उसे हम कल
खाएँगे।
29 तब मेरे बेटे को हम ने पकाया और उसे खा लिया, और
दूसरे दिन मैंने उससे कहा, 'अपना बेटा ला, ताकि हम उसे खाएँ;
"लेकिन उसने अपना बेटा छिपा दिया है।"
30 बादशाह ने उस 'औरत की बातें सुनकर अपने कपड़े फाड़े;
उस वक़्त वह दीवार पर चला जाता था, और लोगों ने देखा कि
अन्दर उसके तन पर टाट है।
31 और उसने कहा, "अगर आज साफ़त के बेटे इलीशा' का सिर
उसके तन पर रह जाए, तो ख़ुदावन्द मुझसे ऐसा बल्कि इससे
ज़्यादा करे।"
32 लेकिन इलीशा' अपने घर में बैठा रहा, और बुज़ुर्ग़ लोग
उसके साथ बैठे थे, और बादशाह ने अपने सामने से एक शख़्स
को भेजा, पर इससे पहले कि वह क़ासिद उसके पास आए, उसने

बुज़ुर्गों से कहा, “तुम देखते हो कि उस क़ातिल के बेटे ने मेरा
सिर उड़ा देने को एक आदमी भेजा है? इसलिए देखो, जब वह
क़ासिद आए, तो दरवाज़ा बन्द कर लेना और मज़बूती से दरवाज़े
को उसके सामने पकड़े रहना। क्या उसके पीछे — पीछे उसके
मालिक के पैरों की आहट नहीं?”
33 और वह उनसे अभी बातें कर ही रहा था कि देखो, कि वह
क़ासिद उसके पास आ पहुँचा, और उसने कहा, “देखो, ये बला
ख़ुदावन्द की तरफ़ से है, अब आगे मैं ख़ुदावन्द का रास्ता क्यूँ
देखूँ?”

7

1 तब इलीशा' ने कहा, तुम ख़ुदावन्द की बात सुनो, ख़ुदावन्द
यूँ फ़रमाता है कि “कल इसी वक़्त के क़रीब सामरिया के फाटक
पर एक मिस्क़ाल में एक पैमाना' मैदा, और एक ही मिस्क़ाल में
दो पैमाना जौ बिकेगा।”
2 तब उस सरदार ने जिसके हाथ पर बादशाह भरोसा करता था,
मर्द — ए — ख़ुदा को जवाब दिया, देख, अगर ख़ुदावन्द आसमान
में खिड़कियाँ भी लगा दे, तोभी क्या ये बात हो सकती है उसने
कहा, “सुन, तू इसे अपनी आँखों से देखेगा, लेकिन तू उसमें से
खाने न पाएगा।”

[illegible]

3 और उस जगह जहाँ से फाटक में दाख़िल होते थे, चार कोढ़ी
थे: उन्होंने एक दूसरे से कहा, हम यहाँ बैठे — बैठे क्यूँ मरें?
4 अगर हम कहें, “शहर के अन्दर जाएँगे, तो शहर में क़हत है
और हम वहाँ मर जाएँगे; और अगर यहीं बैठे रहें, तोभी मरेंगे।
इसलिए आओ, हम अरामी लश्कर में जाएँ, अगर वह हमको
जीता छोड़ें तो हम जीते रहेंगे; और अगर वह हम को मार डालें,
तो हम को मरना ही तो है।”

5 फिर वह शाम के वक़्त उठ कर अरामियों के लश्करगाह को
गए, और जब वह अरामियों के लश्करगाह की बाहर की हद पर
पहुँचे तो देखा, कि वहाँ कोई आदमी नहीं है।
6 क्यूँकि ख़ुदावन्द ने रथों की आवाज़ और घोड़ों की आवाज़
बल्कि एक बड़ी फ़ौज की आवाज़ अरामियों के लश्कर को
सुनवाई, इसलिए वह आपस में कहने लगे, "देखो, इस्राईल के
बादशाह ने हित्तियों के बादशाहों और मिस्रियों के बादशाहों को
हमारे ख़िलाफ़ मज़दूरी पर बुलाया है, ताकि वह हम पर चढ़
आएँ।"
7 इसलिए वह उठे, और शाम को भाग निकले; और अपने ख़ेमे,
और अपने घोड़े, और अपने गधे, बल्कि सारी लश्करगाह जैसी
की तैसी छोड़ दी और अपनी जान लेकर भागे।
8 चुनाँचे जब ये कोढ़ी लश्करगाह की बाहर की हद पर पहुँचे,
तो एक ख़ेमे में जाकर उन्होंने खाया पिया, और चाँदी और सोना
और लिबास वहाँ से ले जाकर छिपा दिया, और लौट कर आए
और दूसरे ख़ेमे में दाख़िल होकर वहाँ से भी ले गए और जाकर
छिपा दिया।
9 फिर वह एक दूसरे से कहने लगे, "हम अच्छा नहीं करते;
आज का दिन ख़ुशख़बरी का दिन है, और हम ख़ामोश हैं; अगर
हम सुबह की रोशनी तक ठहरे रहे तो सज़ा पाएँगे। अब आओ,
हम जाकर बादशाह के घराने को ख़बर दें।"
10 फिर उन्होंने आकर शहर के दरबान को बुलाया और उनको
बताया, "हम अरामियों की लश्करगाह में गए, और देखो, वहाँ न
आदमी है न आदमी की आवाज़, सिर्फ़ घोड़े बन्धे हुए, और गधे
बन्धे हुए, और ख़ेमे जैसे थे वैसे ही हैं।"
11 और दरबानों ने पुकार कर बादशाह के महल में ख़बर दी।
12 तब बादशाह रात ही को उठा, और अपने ख़ादिमों से कहा
कि "मैं तुम को बताता हूँ, अरामियों ने हम से क्या किया है? वह

ख़ूब जानते हैं कि हम भूके हैं; इसलिए वह मैदान में छिपने के लिए लश्करगाह से निकल गए हैं, और सोचा है कि जब हम शहर से निकलें तो वह हम को ज़िन्दा पकड़ लें, और शहर में दाख़िल हो जाएँ।"

13 और उसके ख़ादिमों में से एक ने जवाब दिया, "ज़रा कोई उन बचे हुए घोड़ों में से जो शहर में बाक़ी हैं पाँच घोड़े ले वह तो इस्राईल की सारी जमा'अत की तरह हैं जो बाक़ी रह गई है, बल्कि वह उस सारी इस्राईली जमा'अत की तरह हैं जो फ़ना हो गई, और हम उनको भेज कर देखें।"

14 तब उन्होंने दो रथ घोड़ों के साथ लिए, और बादशाह ने उनको अरामियों के लश्कर के पीछे भेजा कि जाकर देखें।

15 और वह उनके पीछे यरदन तक चले गए; और देखो, सारा रास्ता कपड़ों और बर्तनों से भरा पड़ा था जिनको अरामियों ने जल्दी में फेंक दिया था। तब क़ासिदों ने लौट कर बादशाह को ख़बर दी।

16 तब लोगों ने निकल कर अरामियों की लश्करगाह को लूटा। फिर एक मिस्क़ाल में एक पैमाना मैदा, और एक ही मिस्क़ाल में दो पैमाने जौ, ख़ुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ बिका।

17 और बादशाह ने उसी सरदार को जिसके हाथ पर भरोसा करता था, फाटक पर मुक़र्रर किया; और वह फाटक में लोगों के पैरों के नीचे दब कर मर गया, जैसा नबी ने फ़रमाया था, जिसने ये उस वक़्त कहा था जब बादशाह उसके पास आया था।

18 और नबी ने जैसा बादशाह से कहा था, कल इसी वक़्त के क़रीब एक मिस्क़ाल में दो पैमाने जौ, और एक ही मिस्क़ाल में एक पैमाना मैदा सामरिया के फाटक पर मिलेगा, वैसा ही हुआ;

19 और उस सरदार ने नबी को जवाब दिया था, "देख, अगर ख़ुदावन्द आसमान में खिड़कियाँ भी लगा दे, तोभी क्या ऐसी बात हो सकती है?" और इसने कहा था, "तू अपनी आँखों से देखेगा, पर उसमें से खाने न पाएगा।"

20 इसलिए उसके साथ ठीक ऐसा ही हुआ, क्यूँकि वह फाटक
में लोगों के पैरों के नीचे दबकर मर गया।

8

[illegible]

1 और इलीशा' ने उस 'औरत से जिसके बेटे को उसने ज़िन्दा
किया था, ये कहा था, “उठ और अपने ख़ानदान के साथ जा, और
जहाँ कहीं तू रह सके वहीं रह; क्यूँकि ख़ुदावन्द ने काल का हुक्म
दिया है; और वह मुल्क में सात बरस तक रहेगा भी।”
2 तब उस 'औरत ने उठ कर नबी के कहने के मुताबिक़ किया,
और अपने ख़ानदान के साथ जाकर फ़िलिस्तियों के मुल्क में सात
बरस तक रही।
3 सातवें साल के आख़िर में ऐसा हुआ कि ये 'औरत
फ़िलिस्तियों के मुल्क से लौटी, और बादशाह के पास अपने घर
और अपनी ज़मीन के लिए फ़रियाद करने लगी।
4 उस वक़्त बादशाह नबी के ख़ादिम जेहाज़ी से बातें कर रहा
और ये कह रहा था, “ज़रा वह सब बड़े बड़े काम जो इलीशा' ने
किए मुझे बता।”
5 और ऐसा हुआ कि जब वह बादशाह को बता ही रहा था, कि
उसने एक मुर्दे को ज़िन्दा किया, तो वही 'औरत जिसके बेटे को
उसने ज़िन्दा किया था, आकर बादशाह के अपने घर और अपनी
ज़मीन के लिए फ़रियाद करने लगी। तब जेहाज़ी बोल उठा, “ऐ
मेरे मालिक, ऐ बादशाह! यही वह 'औरत है, यही उसका बेटा है
जिसे इलीशा' ने ज़िन्दा किया था।”
6 जब बादशाह ने उस 'औरत से पूछा, तो उसने उसे सब कुछ
बताया। तब बादशाह ने एक ख़्वाजासरा को उसके लिए मुक़र्रर
कर दिया और फ़रमाया, सब कुछ जो इसका था, और जब से
इसने इस मुल्क को छोड़ा, उस वक़्त से अब तक की खेत की
सारी पैदावार इसको दे दो।

7 और इलीशा' दमिश्क़ में आया, और अराम का बादशाह
बिनहदद बीमार था; और उसकी ख़बर हुई, वह नबी इधर आया
है,
8 और बादशाह ने हज़ाएल से कहा, “अपने हाथ में तोहफ़ा
लेकर नबी के इस्तक़बाल को जा, और उसके ज़रिए ख़ुदावन्द से
दरियाफ़्त कर, 'मैं इस बीमारी से शिफ़ा पाऊँगा या नहीं?' ”
9 तब हज़ाएल उससे मिलने को चला और उसने दमिश्क़ की हर
उम्दा चीज़ में से चालीस ऊँटों पर तोहफ़े लदवाकर अपने साथ
लिया, और आकर उसके सामने खड़ा हुआ और कहने लगा, तेरे
बेटे बिनहदद अराम के बादशाह ने मुझ को तेरे पास ये पूछने को
भेजा है, 'मैं इस बीमारी से शिफ़ा पाऊँगा या नहीं?“
10 इलीशा' ने उससे कहा, जा उससे कह तू ज़रूर शिफ़ा पाएगा
तोभी ख़ुदावन्द ने मुझ को यह बताया है कि वह यक़ीनन मर
जाएगा।”
11 और वह उसकी तरफ़ नज़र लगा कर देखता रहा, यहाँ तक
कि वह शर्मा गया; फिर नबी रोने लगा।
12 और हज़ाएल ने कहा, “मेरे मालिक रोता क्यूँ है?” उसने
जवाब दिया, इसलिए कि मैं उस गुनाह से जो तू बनी — इस्राईल
से करेगा, आगाह हूँ; तू उनके क़िलों' में आग लगाएगा, और उनके
जवानों को हलाक करेगा, और उनके बच्चों को पटख़ — पटख़
कर टुकड़े — टुकड़े करेगा, और उनकी हामिला 'औरतों को चीर
डालेगा।
13 हज़ाएल ने कहा, “तेरे ख़ादिम की जो कुत्ते के बराबर है,
हक़ीक़त ही क्या है, जो वह ऐसी बड़ी बात करे?” इलीशा'
ने जवाब दिया, ख़ुदावन्द ने मुझे बताया है कि “तू अराम का
बादशाह होगा।”
14 फिर वह इलीशा' से रुख़्सत हुआ, और अपने मालिक के
पास आया, उसने पूछा, “इलीशा' ने तुझ से क्या कहा?” उसने

जवाब दिया, “उसने मुझे बताया कि तू ज़रूर शिफ़ा पाएगा।”
15 और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उसने बाला पोश को लिया,
और उसे पानी में भिगोकर उसके मुँह पर तान दिया, ऐसा कि वह
मर गया। और हज़ाएल उसकी जगह सल्तनत करने लगा।
16 और इस्राईल का बादशाह अख़ीअब के बेटे यूराम के पाँचवें
साल, जब यहूसफ़त यहूदाह का बादशाह था, तो यहूदाह के
बादशाह यहूसफ़त का बेटा यहूराम सल्तनत करने लगा।
17 जब वह सल्तनत करने लगा तो बत्तीस साल का था, और
उसने येरूशलेम में आठ साल बादशाही की।
18 उसने भी अख़ीअब के घराने की तरह इस्राईल के बादशाहों
के रास्ते की पैरवी की; क्यूँकि अख़ीअब की बेटी उसकी बीवी थी
और उसने ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया।
19 तोभी ख़ुदावन्द ने अपने बन्दे दाऊद की ख़ातिर न चाहा कि
यहूदाह को हलाक करे। क्यूँकि उसने उससे वा'दा किया था कि
वह उसे उसकी नस्ल के वास्ते हमेशा के लिए एक चराग़ देगा।
20 उसी के दिनों में अदोम यहूदाह की इता'अत से फिर गया,
और उन्होंने अपने लिए एक बादशाह बना लिया।
21 तब यूराम' सईर को गया और उसके सब रथ उसके साथ थे,
और उसने रात को उठ कर अदोमियों को जो उसे घेरे हुए थे, और
रथों के सरदारों को मारा, और लोग अपने डेरों को भाग गए।
22 ऐसे अदोम यहूदाह की इता'अत से आज तक फिरा है। और
उसी वक़्त लिबनाह भी फिर गया।
23 यूराम के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, तो क्या
वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं?
24 और यूराम अपने बाप दादा के साथ सो गया, और दाऊद
के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफ़्न हुआ, और उसका
बेटा अख़ज़ियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

25 और इस्राईल के बादशाह अख़ीअब के बेटे यूराम के बारहवें
साल से यहूदाह का बादशाह यहूराम का बेटा अख़ज़ियाह
सल्तनत करने लगा।
26 अख़ज़ियाह बाईस साल का था, जब वह सल्तनत करने
लगा; और उसने येरूशलेम में एक साल सल्तनत की। उसकी माँ
का नाम 'अतलियाह था, जो इस्राईल के बादशाह उमरी की बेटी
थी।
27 और वह भी अख़ीअब के घराने के रास्ते पर चला, और उसने
अख़ीअब के घराने की तरह ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया,
क्यूँकि वह अख़ीअब के घराने का दामाद था।
28 और वह अख़ीअब के बेटे यूराम के साथ रामात जिल'आद
में अराम के बादशाह हज़ाएल से लड़ने को गया, और अरामियों
ने यूराम को ज़ख़्मी किया।
29 इसलिए यूराम बादशाह लौट गया ताकि वह यज़र'एल में
उन ज़ख़्मों का इलाज कराए, जो अराम के बादशाह हज़ाएल से
लड़ते वक़्त रामा में अरामियों के हाथ से लगे थे। और यहूदाह
का बादशाह यहूराम का बेटा अख़ज़ियाह अख़ीअब के बेटे यूराम
को देखने के लिए यज़रएल में आया क्यूँकि वह बीमार था।

9

[illegible]

1 और इलीशा' नबी ने अम्बियाज़ादों में से एक को बुलाकर
उससे कहा, अपनी कमर बाँध, और तेल की ये कुप्पी अपने हाथ
में ले, और रामात जिल'आद को जा।
2 और जब तू वहाँ पहुँचे तो याहू — बिन — यहूसफ़त बिन —
निमसी को पूछ, और अन्दर जाकर उसे उसके भाइयों में से उठा
और अन्दर की कोठरी में ले जा।
3 फिर तेल की यह कुप्पी लेकर उसके सिर पर डाल और
कह, "ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि मैंने तुझे मसह करके इस्राईल

का बादशाह बनाया है,' फिर तू दरवाज़ा खोल कर भागना और ठहरना मत।"

4 तब वह जवान, या'नी वह जवान जो नबी था, रामात जिल'आद को गया।

5 जब वह पहुँचा तो लश्कर के सरदार बैठे हुए थे उसने कहा, "ऐ सरदार, मेरे पास तेरे लिए एक पैग़ाम है।" याहू ने कहा, "हम सभों में से किसके लिए?" उसने कहा, "ऐ सरदार, तेरे लिए।"

6 तब वह उठ कर उस घर में गया, तब उसने उसके सिर पर वह तेल डाला, और उससे कहा, "ख़ुदावन्द, इस्राईल का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि मैंने तुझे मसह करके ख़ुदावन्द की क़ौम या'नी इस्राईल का बादशाह बनाया है।

7 इसलिए तू अपने मालिक अख़ीअब के घराने को मार डालना, ताकि मैं अपने बन्दों, नबियों के ख़ून का और ख़ुदावन्द के सब बन्दों के ख़ून का इन्तिक़ाम ईज़बिल के हाथ से लूँ।

8 क्यूँकि अख़ीअब का सारा घराना हलाक होगा, और मैं अख़ीअब की नस्ल के हर एक लड़के को, और उसको जो इस्राईल में बन्द है और उसको जो आज़ाद छूटा हुआ है, काट डालूँगा।

9 और मैं अख़ीअब के घर को नबात के बेटे युरब'आम के घर और अख़ियाह के बेटे बाशा के घर की तरह कर दूँगा।

10 और ईज़बिल को यज़र'एल के इलाक़े में कुत्ते खाएँगे, वहाँ कोई न होगा जो उसे दफ़्न करे।" फिर वह दरवाज़ा खोल कर भागा।

11 तब याहू अपने मालिक के ख़ादिमों के पास बाहर आया; और एक ने उससे पूछा, "सब ख़ैर तो है? यह दीवाना तेरे पास क्यूँ आया था?" उसने उनसे कहा, "तुम उस शख़्स से और उसके पैग़ाम से वाक़िफ हो।"

12 उन्होंने कहा, "यह झूठ है; अब हम को हाल बता।" उसने कहा, "उसने मुझ से इस तरह की बात की और कहा, 'ख़ुदावन्द

यूँ फ़रमाता है, कि “मैंने तुझे मसह करके इस्राईल का बादशाह
बनाया है।’ ”
13 तब उन्होंने जल्दी की और हर एक ने अपनी पोशाक लेकर
उसके नीचे सीढ़ियों की चोटी पर बिछाई, और तुरही फूंककर
कहने लगे, “याहू बादशाह है।”
14 तब याहू — बिन — यहूसफ़त — बिन — निमसी ने यूराम
के ख़िलाफ़ साज़िश की। और यूराम सारे इस्राईल के साथ अराम
के बादशाह हज़ाएल की वजह से रामात जिल'आद की हिमायत
कर रहा था;
15 लेकिन यूराम बादशाह लौट गया था, ताकि यज़र'एल में
उन ज़ख़्मों का इलाज कराए जो अराम के बादशाह हज़ाएल से
लड़ते वक़्त अरामियों के हाथ से लगे थे। तब याहू ने कहा, “अगर
तुम्हारी मर्ज़ी यही है, तो कोई यज़र'एल जाकर ख़बर करने के
लिए इस शहर से भागने और निकलने न पाए।”
16 और याहू रथ पर सवार होकर यज़र'एल को गया, क्यूँकि
यूराम वहीं पड़ा हुआ था। और यहूदाह का बादशाह अख़ज़ियाह
यूराम की मुलाक़ात को आया हुआ था।
17 यज़र'एल में निगहबान बुर्ज पर खड़ा था, और उसने जो
याहू के लश्कर को आते हुए देखा, तो कहा, “मुझे एक लश्कर
दिखाई देता है।” यूराम ने कहा, एक सवार को लेकर उनसे मिलने
को भेज, वह ये पूछे, “ख़ैर है?”
18 चुनाँचे एक शख़्स घोड़े पर उससे मिलने को गया और कहा,
बादशाह पूछता है, 'ख़ैर है?' “याहू ने कहा, तुझ को ख़ैर से क्या
काम? मेरे पीछे हो ले।” फिर निगहबान ने कहा, “क़ासिद उनके
पास पहुँच तो गया, लेकिन वापस नहीं आता।”
19 तब उसने दूसरे को घोड़े पर रवाना किया, जिसने उनके पास
जाकर उनसे कहा, बादशाह यूँ कहता है, 'ख़ैर है?' “याहू ने जवाब

दिया, तुझे ख़ैर से क्या काम? मेरे पीछे हो ले।"
20 फिर निगहबान ने कहा, "वह भी उनके पास पहुँच तो गया,
लेकिन वापस नहीं आता। और रथ का हाँकना ऐसा है जैसे निमसी
के बेटे याहू का हाँकना होता है, क्यूँकि वही सुस्ती से हाँकता है।"
21 तब यूराम ने फ़रमाया, "जोत ले।" तब उन्होंने उसके रथ
को जोत लिया। तब इस्राईल का बादशाह यूराम और यहूदाह का
बादशाह अख़ज़ियाह अपने — अपने रथ पर निकले और याहू से
मिलने को गए, और यज़र'एली नबोत की मिल्कियत में उससे दो
चार हुए।
22 यूराम ने याहू को देखकर कहा, "ऐ याहू, ख़ैर है?" उसने
जवाब दिया, "जब तक तेरी माँ ईज़बिल की ज़िनाकारियाँ और
उसकी जादूगरियाँ इस क़दर हैं, तब तक कैसी ख़ैर?"
23 तब यूराम ने बाग़' मोड़ी और भागा, और अख़ज़ियाह से
कहा, "ऐ अख़ज़ियाह यह धोखा है।"
24 तब याहू ने अपने सारे ज़ोर से कमान खेंची', और यूराम के
दोनों शानों के बीच ऐसा मारा के तीर उसके दिल से पार हो गया
और वह अपने रथ में गिरा।
25 तब याहू ने अपने लश्कर के सरदार बिदक़र से कहा, उसे
लेकर यज़र'एली नबोत की मिल्कियत के खेत में डाल दे; क्यूँकि
याद कर कि जब मैं और तू उसके बाप अख़ीअब के पीछे पीछे
सवार होकर चल रहे थे, तो ख़ुदावन्द ने ये फ़तवा उस पर दिया
था,
26 "यक़ीनन मैंने कल नबोत के ख़ून और उसके बेटों के ख़ून को
देखा है, ख़ुदावन्द फ़रमाता है; और मैं इसी खेत में तुझे बदला
दूँगा, ख़ुदावन्द फ़रमाता है। इसलिए जैसा ख़ुदावन्द ने फ़रमाया
है, उसे लेकर उसी जगह डाल दे।"
27 लेकिन जब यहूदाह के बादशाह अख़ज़ियाह ने ये देखा, तो
वह बाग़ की बारह दरी के रास्ते से निकल भागा। और याहू ने

उसका पीछा किया और कहा, “उसे भी रथ ही में मार दो।” चुनाँचे
उन्होंने उसे जूर की चढ़ाई पर, जो इबली'आम के क़रीब है मारा;
और वो मजिद्दो को भागा, और वहीं मर गया।
28 और उसके ख़ादिम उसको एक रथ में येरूशलेम को ले गए,
और उसे उसकी क़ब्र में दाऊद के शहर में उसके बाप — दादा के
साथ दफ़न किया।
29 और अख़ीअब के बेटे यूराम के ग्यारहवें साल अख़ज़ियाह
यहूदाह का बादशाह हुआ।
30 जब याहू यज़र'एल में आया, तो ईज़बिल ने सुना और
अपनी आँखों में सुरमा लगा, और अपना सिर संवार खिड़की से
झाँकने लगी।
31 और जैसे ही याहू फाटक में दाख़िल हुआ, वह कहने लगी,
“ऐ ज़िमरी। अपने आक़ा के क़ातिल, ख़ैर तो है?”
32 पर उसने खिड़की की तरफ़ मुँह उठा कर कहा, “मेरी तरफ़
कौन है, कौन?” तब दो तीन ख़्वाजासराओं ने इसकी तरफ़ देखा।
33 इसने कहा, “उसे नीचे गिरा दो।” तब उन्होंने उसे नीचे गिरा
दिया, और उसके ख़ून के छींटें दीवार पर और घोड़ों पर पड़ीं, और
इसने उसे पैरों तले रौदा।
34 जब ये अन्दर आया, तो इसने खाया पिया; फिर कहने लगा,
“जाओ, उस ला'नती 'औरत को देखो, और उसे दफ़्न करो क्यूँकि
वह शहज़ादी है।”
35 और वह उसे दफ़्न करने गए, पर सिर और उसके पैर और
हथेलियों के सिवा उसका और कुछ उनको न मिला।
36 इसलिए वह लौट आए और उसे ये बताया, इसने कहा, ये
ख़ुदावन्द का वही सुख़न है, जो उसने अपने बन्दे एलियाह तिशबी
के मा'रिफ़त फ़रमाया था, 'यज़र'एल के इलाक़े में कुत्ते ईज़बिल
का गोश्त खाएँगे;
37 और ईज़बिल की लाश यज़र'एल के इलाक़े में खेत में खाद
की तरह पड़ी रहेगी, यहाँ तक कि कोई न कहेगा कि “यह ईज़बिल

है।”

10

[illegible]

1 सामरिया में अख़ीअब के सत्तर बेटे थे। इसलिए याहू ने
सामरिया में यज़र'एल के अमीरों, या'नी बुज़ुर्गों के पास और
उनके पास जो अख़ीअब के बेटों के पालने वाले थे, ख़त लिख
भेजे,
2 कि “जिस हाल में तुम्हारे मालिक के बेटे तुम्हारे साथ हैं, और
तुम्हारे पास रथ और घोड़े और फ़सीलदार शहर भी और हथियार
भी हैं; इसलिए इस ख़त के पहुँचते ही,
3 तुम अपने मालिक के बेटों में सबसे अच्छे और लायक़ को
चुनकर उसे उसके बाप के तख़्त पर बिठाओ, और अपने मालिक
के घराने के लिए जंग करो।
4 लेकिन वह निहायत परेशान हुए और कहने लगे देखो दो
बादशाह तो उसका मुक़ाबिला न कर सके; तो हम क्यूँकर कर
सकेंगे?”
5 इसलिए महल के दीवान ने और शहर के हाकिम ने और
बुज़ुर्गों ने भी, और लड़कों के पालने वालों ने याहू को कहला
भेजा, “हम सब तेरे ख़ादिम हैं, और जो कुछ तू फ़रमाएगा वह
सब हम करेंगे; हम किसी को बादशाह नहीं बनाएँगे, जो कुछ
तेरी नज़र में अच्छा है वही कर।”
6 तब उसने दूसरी बार एक ख़त उनको लिख भेजा, कि “अगर
तुम मेरी तरफ़ हो और मेरी बात मानना चाहते हो, तो अपने
मालिक के बेटों के सिर उतार कर कल यज़र'एल में इसी वक़्त
मेरे पास आ जाओ।” उस वक़्त शाहज़ादे जो सत्तर आदमी थे,
शहर के उन बड़े आदमियों के साथ थे जो उनके पालनेवाले थे।
7 इसलिए जब यह ख़त उनके पास आया, तो उन्होंने शाहज़ादों
को लेकर उनको, या'नी उन सत्तर आदमियों को क़त्ल किया और

उनके सिर टोकरों में रख कर उनको उसके पास यज़र'एल में भेज दिया।
8 तब एक क़ासिद ने आकर उसे ख़बर दी, "वह शाहज़ादों के
सिर लाए हैं।" उसने कहा, "तुम शहर के फाटक के मदख़ल पर
उनकी दो ढेरियाँ लगा कर कल सुबह तक रहने दो।"
9 और सुबह को ऐसा हुआ कि वह निकल कर खड़ा हुआ और
सब लोगों से कहने लगा, "तुम तो रास्त हो। देखो, मैंने तो अपने
मालिक के ख़िलाफ़ बन्दिश बाँधी और उसे मारा; पर इन सभों को
किसने मारा?
10 इसलिए अब जान लो कि ख़ुदावन्द के उस बात में से, जिसे
ख़ुदावन्द ने अख़ीअब के घराने के हक़ में फ़रमाया, कोई बात ख़ाक
में नहीं मिलेगी; क्यूँकि ख़ुदावन्द ने जो कुछ अपने बन्दे एलियाह
के ज़रिए फ़रमाया था उसे पूरा किया।"
11 इसलिए याहू ने उन सबको जो अख़ीअब के घराने से
यज़र'एल में बच रहे थे, और उसके सब बड़े आदमियों और क़रीबी
दोस्तों और काहिनों को क़त्ल किया, यहाँ तक कि उसने उसके
किसी आदमी को बाक़ी न छोड़ा।
12 फिर वह उठ कर रवाना हुआ और सामरिया को चला। और
रास्ते में गड़रियों के बाल कतरने के घर तक पहुँचा ही था कि
13 याहू को यहूदाह के बादशाह अख़ज़ियाह के भाई मिल गए;
इसने पूछा, "तुम कौन हो?" उन्होंने कहा, "हम अख़ज़ियाह के
भाई हैं; और हम जाते हैं कि बादशाह के बेटों और मलिका के बेटों
को सलाम करें।"
14 तब उसने कहा, कि "उनको ज़िन्दा पकड़ लो।" इसलिए
उन्होंने उनको ज़िन्दा पकड़ लिया और उनको जो बयालीस
आदमी थे बाल कतरने के घर के हौज़ पर क़त्ल किया; उसने उनमें
से एक को भी न छोड़ा।
15 फिर जब वह वहाँ से रुख़्सत हुआ, तो यहूनादाब — बिन
— रैकाब जो उसके इस्तक़बाल को आ रहा था उसे मिला। तब

उसने उसे सलाम किया और उससे कहा "क्या तेरा दिल ठीक है,
जैसा मेरा दिल तेरे दिल के साथ है?" यहूनादाब ने जवाब दिया
कि है। इसलिए उसने कहा, "अगर ऐसा है, तो अपना हाथ मुझे
दे।" तब उसने उसे अपना हाथ दिया; और उसने उसे रथ में अपने
साथ बिठा लिया,
16 और कहा, "मेरे साथ चल, और मेरी ग़ैरत को जो ख़ुदावन्द
के लिए है, देख।" तब उन्होंने उसे उसके साथ रथ पर सवार
कराया,
17 और जब वह सामरिया में पहुँचा, तो अख़ीअब के सब बाक़ी
लोगों को, जो सामरिया में थे क़त्ल किया, यहाँ तक कि उसने,
जैसा ख़ुदावन्द ने एलियाह से कहा था, उसको नेस्त — ओ —
नाबूद कर दिया।
18 फिर याहू ने सब लोगों को जमा' किया, और उनसे कहा,
कि "अख़ीअब ने बा'ल की थोड़ी इबादत की, याहू उसकी बहुत
इबादत करेगा।
19 इसलिए अब तुम बा'ल के सब नबियों और उसके सब पूजने
वालों और पुजारियों को मेरे पास बुला लाओ; उनमें से कोई ग़ैर
हाज़िर न रहे, क्यूँकि मुझे बा'ल के लिए बड़ी क़ुर्बानी करना है।
इसलिए जो कोई ग़ैर हाज़िर रहे, वह ज़िन्दा न बचेगा।" पर याहू
ने इस ग़रज़ से कि बा'ल के पूजनेवालों को हलाक कर दे, ये बहाना
निकाला था।
20 और याहू ने कहा, कि "बा'ल के लिए एक ख़ास 'ईद का
'एलान करो।" तब उन्होंने उसका 'एलान कर दिया।
21 और याहू ने सारे इस्राईल में लोग भेजे, और बा'ल के सब
पूजनेवाले आए, यहाँ तक कि एक शख़्स भी ऐसा न था जो न
आया हो। और वह बा'ल के बुतख़ाने में दाख़िल हुए, और बा'ल
का बुतख़ाना इस सिरे से उस सिरे तक भर गया।
22 फिर उसने उसको जो तोशाखाने पर मुक़र्रर था हुक्म किया,

कि “बा'ल के सब पूजनेवालों के लिए लिबास निकाल ला।” तब
वह उनके लिए लिबास निकाल लाया।
23 तब याहू और यहूनादाब — बिन — रैकाब बा'ल के बुतख़ाने
के अन्दर गए, और उसने बा'ल के पूजनेवालों से कहा, “बयान
करो, और देख लो कि यहाँ तुम्हारे साथ ख़ुदावन्द के ख़ादिमों में
से कोई न हो, सिर्फ़ बा'ल ही के पूजनेवाले हों।”
24 और वह ज़बीहे और सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ पेश करने को
अन्दर गए। और याहू ने बाहर अस्सी जवान मुक़र्रर कर दिए
और कहा, कि “अगर कोई उन लोगों में से जिनको मैं तुम्हारे हाथ
में कर दूँ निकल भागे, तो छोड़ने वाले की जान उसकी जान के
बदले जाएगी।”
25 जब वह सोख़्तनी क़ुर्बानी अदा कर चुका, तो याहू ने
पहरेवालों और सरदारों से कहा, कि “घुस जाओ और उनको क़त्ल
करो, एक भी निकलने न पाए।” चुनाँचे उन्होंने उनको हलाक
किया, और पहरेवालों और सरदारों ने उनको बाहर फेंक दिया
और बा'ल के बुतख़ाने के शहर को गए।
26 और उन्होंने बा'ल के बुतख़ाने की कड़ियों को बाहर निकाल
कर उनको आग में जलाया।
27 और बा'ल के सुतूनों को चकनाचूर किया, और बा'ल का
बुतख़ाना को गिरा कर उसे बैतुल — ख़ला' बना दिया, जैसा आज
तक है।
28 इस तरह याहू ने बा'ल को इस्राईल के बीच से हलाक कर
दिया।
29 तोभी नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने
इस्राईल से गुनाह कराया, याहू बाज़ न आया; या'नी उसने सोने
के बछड़ों को मानने से जो बैतएल और दान में थे, दूरी इख़्तियार
न की।
30 और ख़ुदावन्द ने याहू से कहा, “चूँकि तू ने ये नेकी की है कि

जो कुछ मेरी नज़र में भला था उसे अंजाम दिया है, और अख़ीअब
के घराने से मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ बर्ताव किया है; इसलिए तेरे
बेटे चौथी नस्ल तक इस्राईल के तख़्त पर बैठेंगे।"
31 लेकिन याहू ने ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा की शरी'अत पर
अपने सारे दिल से चलने की फ़िक्र न की; वह युरब'आम के गुनाहों
से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, अलग न हुआ।
32 उन दिनों ख़ुदावन्द इस्राईल को घटाने लगा, और हज़ाएल
ने उनको इस्राईल की सब सरहदों में मारा,
33 या'नी यरदन से लेकर पूरब की तरफ़ जिल'आद के सारे मुल्क
में, और जद्दियों और रूबीनियों और मनस्सियों को, 'अरो'ईर से
जो वादी — ए — अरनून में है, या'नी जिल'आद और बसन को
भी।
34 याहू के बाक़ी काम और सब जो उसने किया, और उसकी
सारी ताक़त का बयान; इसलिए क्या वह सब इस्राईल के
बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?
35 और याहू अपने बाप — दादा के साथ मर गया, और उन्होंने
उसे सामरिया में दफ़न किया, और उसका बेटा यहूआख़ज़ उसकी
जगह बादशाह हुआ।
36 और वह उसी 'अरसे में जिसमें याहू ने सामरिया में बनी —
इस्राईल पर सल्तनत की अठाईस साल का था।

11

'[illegible]

1 जब अख़ज़ियाह की माँ 'अतलियाह ने देखा कि उसका बेटा
मर गया, तब उसने उठकर बादशाह की सारी नस्ल को हलाक
किया।
2 लेकिन यूराम बादशाह की बेटी यहूसबा' ने जो अख़ज़ियाह
की बहन थी, अख़ज़ियाह के बेटे यूआस को लिया, और उसे उन
शाहज़ादों से जो क़त्ल हुए चुपके से जुदा किया; और उसे उसकी

दवा और बिस्तरों के साथ बिस्तरों की कोठरी में कर दिया। और
उन्होंने उसे 'अतलियाह से छिपाए रख्खा, वह मारा न गया।
3 वह उसके साथ ख़ुदावन्द के घर में छ: साल तक छिपा रहा,
और 'अतलियाह मुल्क में सल्तनत करती रही।

??????? ?? ??????? ????? ????

4 सातवें साल में यहोयदा' ने काम करने और पहरेवालों के सौ
— सौ के सरदारों को बुला भेजा, और उनको ख़ुदावन्द के घर
में अपने पास लाकर उनसे 'अहद — ओ — पैमान किया और
ख़ुदावन्द के घर में उनको क़सम खिलाई और बादशाह के बेटे को
उनको दिखाया।
5 और उसने उनको ये हुक्म दिया, कि "तुम ये काम करना: तुम
जो सबत को यहाँ आते हो; इसलिए तुम में से एक तिहाई आदमी
बादशाह के महल के पहरे पर रहें,
6 और एक तिहाई सूर नाम फाटक पर रहें, और एक तिहाई
उस फाटक पर हों जो पहरेवालों के पीछे हैं, यूँ तुम महल की
निगहबानी करना और लोगों को रोके रहना।
7 और तुम्हारे दो लश्कर, या'नी जो सबत के दिन बाहर
निकलते हैं, वह बादशाह के आसपास होकर ख़ुदावन्द के घर की
निगहबानी करें।
8 और तुम अपने अपने हथियार हाथ में लिए हुए बादशाह को
चारों तरफ़ से घेरे रहना, और जो कोई सफ़ों के अन्दर चला आए
वह क़त्ल कर दिया जाए, और तुम बादशाह के बाहर जाते और
अंदर आते वक़्त उसके साथ साथ रहना।"
9 चुनाँचे सौ सौ के सरदारों ने, जैसा यहोयदा' काहिन ने उनको
हुक्म दिया था वैसे ही सब कुछ किया; और उनमें से हर एक ने
अपने आदमियों को जिनकी सबत के दिन अन्दर आने की बारी
थी, उन लोगों के साथ जिनकी सबत के दिन बाहर निकलने की
बारी थी लिया, और यहोयदा' काहिन के पास आए।

10 और काहिन ने दाऊद बादशाह की बर्छियाँ और सिप्परें, जो
ख़ुदावन्द के घर में थीं सौ — सौ के सरदारों को दीं।
11 और पहरेवाले अपने अपने हथियार हाथ में लिए हुए, हैकल
के दाहिने तरफ़ से लेकर बाएँ तरफ़ मज़बह और हैकल के बराबर
— बराबर बादशाह के चारों तरफ़ खड़े हो गए।
12 फिर उसने शाहज़ादे को बाहर लाकर उस पर ताज रख्खा,
और शहादत नामा उसे दिया; और उन्होंने उसे बादशाह बनाया
और उसे मसह किया, और उन्होंने तालियाँ बजाईं और कहा
"बादशाह सलामत रहे!"
13 जब 'अतलियाह ने पहरेवालों और लोगों का शोर सुना, तो
वह उन लोगों के पास ख़ुदावन्द की हैकल में गई;
14 और देखा कि बादशाह दस्तूर के मुताबिक़ सुतून के क़रीब
खड़ा है और उसके पास ही सरदार और नरसिंगे हैं, और सल्तनत
के सब लोग ख़ुश हैं और नरसिंगे फूंक रहे हैं। तब 'अतलियाह ने
अपने कपड़े फाड़े और चिल्लाई, "ग़द्र है! ग़द्र!"
15 तब यहोयदा काहिन ने सौ — सौ के सरदारों को जो लश्कर
के ऊपर थे ये हुक्म दिया, कि "उसको सफ़ों के बीच करके बाहर
निकाल ले जाओ, और जो कोई उसके पीछे चले उसको तलवार
से क़त्ल कर दो।" क्यूँकि काहिन ने कहा, "वह ख़ुदावन्द के घर के
अन्दर क़त्ल न की जाए।"
16 तब उन्होंने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया, और वह उस
रास्ते से गई जिससे घोड़े बादशाह के महल में दाख़िल होते थे,
और वहीं क़त्ल हुई।
17 और यहोयदा' ने ख़ुदावन्द के, और बादशाह और लोगों
के बीच एक 'अहद बाँधा, ताकि वह ख़ुदावन्द के लोग हों, और
बादशाह और लोगों के बीच भी 'अहद बाँधा।
18 और ममलुकत के सब लोग बा'ल के बुतख़ाने में गए और
उसे ढाया, और उन्होंने उसके मज़बहों और बुतों को बिल्कुल

चकनाचूर किया, और बा'ल के पुजारी मत्तान को मज़बहों के
सामने क़त्ल किया। और काहिन ने ख़ुदावन्द के घर के लिए
सरदारों को मुक़र्रर किया;
19 और उसने सौ — सौ के सरदारों और काम करने वालों और
पहरेवालों और सल्तनत के लोगों को लिया, और वह बादशाह
को ख़ुदावन्द के घर से उतार लाए और पहरेवालों के फाटक के
रास्ते से बादशाह के महल में आए; और उसने बादशाहों के तख़्त
पर जुलूस फ़रमाया।
20 और सल्तनत के सब लोग ख़ुश हुए, और शहर में अमन हो
गया। उन्होंने 'अतलियाह को बादशाह के महल के पास तलवार
से क़त्ल किया।
21 और जब यूआस सल्तनत करने लगा तो सात साल का था।

12

[illegible]

1 और याहू के सातवें साल यहूआस' बादशाह हुआ और उसने
येरूशलेम में चालीस साल सल्तनत की। उसकी माँ का नाम
ज़िबियाह था जो बैरसबा' की थी।
2 और यहूआस ने इस तमाम 'अर्से में जब तक यहोयदा' काहिन
उसकी ता'लीम — व — तरबियत करता रहा, वही काम किया
जो ख़ुदावन्द की नज़र में ठीक था।
3 तोभी ऊँचे मक़ाम ढाए न गए, और लोग अभी ऊँचे मक़ामों
पर क़ुर्बानी करते और ख़ुशबू जलाते थे।
4 और यहूआस' ने काहिनों से कहा, कि "मुक़द्दस की हुई चीज़ों
की सब नक़दी जो मौजूदा सिक्के में ख़ुदावन्द के घर में पहुँचाई
जाती है, या'नी उन लोगों की नक़दी जिनके लिए हर शख़्स की
हैसियत के मुताबिक़ अन्दाज़ा लगाया जाता है, और वह सब
नक़दी जो हर एक अपनी ख़ुशी से ख़ुदावन्द के घर में लाता है,

5 इन सबको काहिन अपने अपने जान पहचान से लेकर अपने
पास रख लें; और हैकल की दरारों की जहाँ कहीं कोई दरार मिले
मरम्मत करें।"
6 लेकिन यहूआस के तेईसवें साल तक काहिनों ने हैकल की
दरारों की मरम्मत न की।
7 तब यहूआस बादशाह ने यहोयदा' काहिन को और, और
काहिनों को बुलाकर उनसे कहा, "तुम हैकल की दरारों की मरम्मत
क्यूँ नहीं करते? इसलिए अब अपने अपने जान — पहचान से
नक़दी न लेना, बल्कि इसको हैकल की दरारों के लिए हवाले
करो।"
8 इसलिए काहिनों ने मंज़ूर कर लिया कि न तो लोगों से नक़दी
लें और न हैकल की दरारों की मरम्मत करें।
9 तब यहोयदा' काहिन ने एक सन्दूक़ लेकर उसके ऊपर में एक
सूराख किया, और उसे मज़बह के पास रख्खा, ऐसा कि ख़ुदावन्द
की हैकल में दाख़िल होते वक़्त वह दहनी तरफ़ पड़ता था; और
जो काहिन दरवाज़े के निगहबान थे, वह सब नक़दी जो ख़ुदावन्द
के घर में लाई जाती थी उसी में डाल देते थे।
10 जब वह देखते थे कि सन्दूक़ में बहुत नक़दी हो गई है, तो
बादशाह का मुन्शी और सरदार काहिन ऊपर आकर उसे थैलियों
में बाँधते थे, और उस नक़दी को जो ख़ुदावन्द के घर में मिलती
थी गिन लेते थे।
11 और वह उस नक़दी को जो तोल ली जाती थी, उनके हाथों
में सौप देते थे जो काम करनेवाले, या'नी ख़ुदावन्द की हैकल
की देख भाल करते थे; और वह उसे बढ़इयों और मे'मारों पर जो
ख़ुदावन्द के घर का काम बनाते थे।
12 और राजों और संग तराशों पर और ख़ुदावन्द की हैकल
की दरारों की मरम्मत के लिए लकड़ी और तराशे हुए पत्थर
ख़रीदने में, और उन सब चीज़ों पर जो हैकल की मरम्मत के लिए
इस्ते'माल में आती थी ख़र्च करते थे।

13 लेकिन जो नक़दी ख़ुदावन्द की हैकल में लाई जाती थी,
उससे ख़ुदावन्द की हैकल के लिए चाँदी के प्याले, या गुलगीर,
या देगचे, या नरसिर्गे, या'नी सोने के बर्तन या चाँदी के बर्तन न
बनाए गए,
14 क्यूँकि ये नक़दी कारीगरों को दी जाती थी, और इसी से
उन्होंने ख़ुदावन्द की हैकल की मरम्मत की।
15 इसके अलावा जिन लोगों के हाथ वह इस नक़दी को सुपुर्द
करते थे, ताकि वह उसे कारीगरों को दें, उनसे वह उसका कुछ
हिसाब नहीं लेते थे इसलिए कि वह ईमानदारी से काम करते थे।
16 और जुर्म की क़ुर्बानी की नक़दी और ख़ता की क़ुर्बानी की
नक़दी, ख़ुदावन्द की हैकल में नहीं लाई जाती थी, वह काहिनों
की थी।
17 तब शाह — ए — अराम हज़ाएल ने चढ़ाई की, और जात
से लड़कर उसे ले लिया। फिर हज़ाएल ने येरूशलेम का रुख़ किया
ताकि उस पर चढ़ाई करे।
18 तब शाह — ए — यहूदाह यहूआस' ने सब मुक़द्दस
चीज़ें जिनको उसके बाप — दादा, यहूसफ़त और यहूराम और
अख़ज़ियाह, यहूदाह के बादशाहों ने नज़्र किया था, और अपनी
सब मुक़द्दस चीज़ों को और सब सोना जो ख़ुदावन्द की हैकल
के ख़ज़ानों और बादशाह के महल में मिला, लेकर शाहे अराम
हज़ाएल को भेज दिया; तब वह येरूशलेम से हटा।
19 यूआस के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया,
इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब
में लिखे नहीं?
20 उसके ख़ादिमों ने उठकर साज़िश की और यूआस को मिल्लो
के महल में जो सिल्ला की उतराई पर है, क़त्ल किया;
21 या'नी उसके ख़ादिमों यूसकार — बिन — समा'अत, और
यहूज़बद — बिन — शूमीर ने उसे मारा और वह मर गया, और

उन्होंने उसे उसके बाप — दादा के साथ दाऊद के शहर में दफ़न
किया; और उसका बेटा अमसियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

13

[illegible]

1 और शाह — ए — यहूदाह अख़ज़ियाह के बेटे यूआस के
तेईसवें बरस से याहू का बेटा यहूआख़ज़ सामरिया में इस्राईल
पर सल्तनत करने लगा और उसने सत्रह बरस सल्तनत की।
2 और उसने ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया और नबात
के बेटे युरब'आम के गुनाहों की पैरवी की, जिनसे उसने बनी —
इस्राईल से गुनाह कराया, उसने उनसे किनारा न किया।
3 और ख़ुदावन्द का ग़ुस्सा बनी इस्राईल पर भड़का, और उसने
उनको बार बार शाह — ए — अराम हज़ाएल, और हज़ाएल के
बेटे बिनहदद के क़ाबू में कर दिया।
4 और यहूआख़ज़ ख़ुदावन्द के सामने गिड़गिड़ाया और
ख़ुदावन्द ने उसकी सुनी, क्यूँकि उसने इस्राईल की मज़लूमी को
देखा कि अराम का बादशाह उन पर कैसा ज़ुल्म करता है।
5 और ख़ुदावन्द ने बनी इस्राईल को एक नजात देनेवाला
इनायत किया, इसलिए वह अरामियों के हाथ से निकल गए,
और बनी — इस्राईल पहले की तरह अपने ख़ेमों में रहने लगे।
6 तोभी उन्होंने युरब'आम के घराने के गुनाहों से, जिनसे उसने
बनी — इस्राईल से गुनाह कराया, किनारा न किया बल्कि उन्हीं
पर चलते रहे; और यसीरत भी सामरिया में रही!
7 और उसने यहूआख़ज़ के लिए लोगों में से सिर्फ़ पचास सवार
और दस रथ और दस हज़ार प्यादे छोड़े; इसलिए कि अराम के
बादशाह ने उनको तबाह कर डाला, और रौंद — रौंद कर ख़ाक
की तरह कर दिया'।

8 और यहुआख़ज़ के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया
और उसकी क़ुव्वत, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की
तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?
9 और यहूआख़ज़ अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
उन्होंने उसे सामरिया में दफ़न किया; और उसका बेटा यूआस
उसकी जगह बादशाह हुआ।
10 और शाह — ए — यहूदाह यूआस के सैतीसवें बरस
यहूआख़ज़ का बेटा यहूआस सामरिया में इस्राईल पर सल्तनत
करने लगा, और उसने सोलह बरस सल्तनत की।
11 और उसने ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया और नबात
के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह
कराया, बाज़ न आया बल्कि उन ही पर चलता रहा।
12 और यहूआस के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया
और उसकी क़ुव्वत जिससे वह शाह — ए — यहूदाह अमसियाह
से लड़ा, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की
किताब में लिखा नहीं?
13 और यूआस अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
युरब'आम उसके तख़्त पर बैठा; और यूआस। सामरिया में
इस्राईल के बादशाहों के साथ दफ़न हुआ।
14 इलीशा' को वह मर्ज़ लगा जिससे वह मर गया। और शाह
— ए — इस्राईल यूआस' उसके पास गया और उसके ऊपर रो कर
कहने लगा, ऐ मेरे बाप, ऐ मेरे बाप, इस्राईल के रथ और उसके
सवार!“
15 और इलीशा' ने उससे कहा, तीर — ओ — कमान ले ले।”
इसलिए उसने अपने लिए तीर — ओ — कमान ले लिया।
16 फिर उसने शाह — ए — इस्राईल से कहा, “कमान पर
अपना हाथ रख।” इसलिए उसने अपना हाथ उस पर रखा; और
इलीशा' ने बादशाह के हाथों पर अपने हाथ रख्खे,

17 और कहा, “पूरब की तरफ़ की खिड़की खोल।” इसलिए
उसने उसे खोला, तब इलीशा' ने कहा, “तीर चला।” तब उसने
चलाया। तब वह कहने लगा, “ये फ़तह का तीर ख़ुदावन्द का,
या'नी अराम पर फ़तह पाने का तीर है; क्यूँकि तू अफ़ीक़ में
अरामियों को मारेगा, यहाँ तक कि उनको हलाक कर देगा।”
18 फिर उसने कहा, “तीरों को ले।” तब उसने उनको लिया।
फिर उसने शाह — ए — इस्राईल से कहा, “ज़मीन पर मार।”
इसलिए उसने तीन बार मारा और ठहर गया।
19 तब मर्द — ए — ख़ुदा उस पर ग़ुस्सा हुआ और कहने लगा,
“तुझे पाँच या छ: बार मारना चाहिए था, तब तू अरामियों को
इतना मारता कि उनको हलाक कर देता; लेकिन अब तू अरामियों
को सिर्फ़ तीन बार मारेगा।”
20 और इलीशा' ने वफ़ात पाई, और उन्होंने उसे दफ़न किया।
और नये साल के शुरू' में मोआब के लश्कर मुल्क में घुस आए।
21 और ऐसा हुआ कि जब वह एक आदमी को दफ़न कर रहे
थे तो उनको एक लश्कर नज़र आया, तब उन्होंने उस शख़्स को
इलीशा' की क़ब्र में डाल दिया, और वह शख़्स इलीशा' की हड्डियों
से टकराते ही ज़िन्दा हो गया और अपने पाँव पर खड़ा हो गया।
22 और शाह — ए — आराम हज़ाएल, यहूआख़ज़ के 'अहद
में बराबर इस्राईल को सताता रहा।
23 और ख़ुदावन्द उन पर मेहरबान हुआ और उसने उन पर तरस
खाया, और उस 'अहद की वजह से जो उसने अब्रहाम और इस्हाक़
और या'क़ूब से बाँधा था, उनकी तरफ़ इलितफ़ात की; और न
चाहा कि उनको हलाक करे, और अब भी उनको अपने सामने से
दूर न किया।
24 और शाह — ए — अराम हज़ाएल मर गया, और उसका
बेटा बिन हदद उसकी जगह बादशाह हुआ।
25 और यहूआख़ज़ के बेटे यहूआस ने हज़ाएल के बेटे बिन हदद

के हाथ से वह शहर छीन लिए जो उसने उसके बाप यहूआख़ज़
के हाथ से जंग करके ले लिए थे। तीन बार यूआस ने उसे शिकस्त
दी और इस्राईल के शहरों को वापस ले लिया।

14

[illegible]

1 और शाह — ए — इस्राईल यहूआख़ज़ के बेटे यूआस के
दूसरे साल से शाह — ए — यहूदाह यूआस का बेटा अमसियाह
सल्तनत करने लगा।
2 वह पच्चीस बरस का था जब सल्तनत करने लगा, और
उसने येरूशलेम में उन्तीस बरस सल्तनत की। उसकी माँ का नाम
यहू'अद्दान था जो येरूशलेम की थी
3 उसने वह काम किया जो ख़ुदावन्द की नज़र में नेक था, तोभी
अपने बाप दाऊद की तरह नहीं; बल्कि उसने सब कुछ अपने बाप
यूआस की तरह किया।
4 क्यूँकि ऊँचे मक़ाम ढाए न गए, लोग अभी ऊँचे मक़ामों पर
क़ुर्बानी करते और ख़ुशबू जलाते थे।
5 जब सल्तनत उसके हाथ में मज़बूत हो गई, तो उसने अपने
उन मुलाज़िमों को जिन्होंने उसके बाप बादशाह को क़त्ल किया
था जान से मारा।
6 लेकिन उसने उन क़ातिलों के बच्चों को जान से न मारा;
क्यूँकि मूसा की शरी'अत की किताब में, जैसा ख़ुदावन्द ने
फ़रमाया, लिखा है: "बेटों के बदले बाप न मारे जाएँ, और न
बाप के बदले बेटे मारे जाएँ, बल्कि हर शख़्स अपने ही गुनाह की
वजह से मरे।"
7 उसने वादी — ए — शोर में दस हज़ार अदूमी मारे और सिला'
को जंग करके ले लिया, और उसका नाम युक़तील रख्खा जो आज
तक है।

8 तब अमसियाह ने शाह — ए — इस्राईल यहूआस — बिन
— यहूआख़ज़ — बिन — याहू के पास क़ासिद रवाना किए और
कहला भेजा "ज़रा आ तो, हम एक दूसरे का मुक़ाबला करें।"
9 और शाह — ए — इस्राईल यहूआस ने शाह — ए — यहूदाह
अमसियाह को कहला भेजा, लुबनान के ऊँट — कटारे ने लुबनान
के देवदार को पैग़ाम भेजा, "अपनी बेटी की मेरे बेटे से शादी कर
दे; इतने में एक जंगली जानवर जो लुबनान में था गुज़रा, और
ऊँट — कटारे को रौंद डाला।
10 तू ने बेशक अदोम को मारा, और तेरे दिल में ग़ुरूर बस गया
है; इसलिए उसी की डींग मार और घर ही में रह, तू क्यूँ नुक़्सान
उठाने को छेड़ — छाड़ करता है; जिससे तू भी दुख़ उठाए और
तेरे साथ यहूदाह भी?"।
11 लेकिन अमसियाह ने न माना। तब शाह — ए — इस्राईल
यहूआस ने चढ़ाई की, और वह और शाह — ए — यहूदाह
अमसियाह बैतशम्स में जो यहूदाह में है, एक दूसरे के सामने
हुए।
12 और यहूदाह ने इस्राईल के आगे शिकस्त खाई, और उनमें
से हर एक अपने ख़ेमे को भागा।
13 लेकिन शाह — ए — इस्राईल यहूआस ने शाह — ए —
यहूदाह अमसियाह — बिन — यहूआस — बिन — अख़ज़ियाह
को बैत — शम्स में पकड़ लिया और येरूशलेम में आया, और
येरूशलेम की दीवार इफ़्राईम के फाटक से कोने वाले फाटक तक,
चार सौ हाथ के बराबर ढा दी।
14 और उसने सब सोने और चाँदी की, और सब बर्तनों को जो
ख़ुदावन्द की हैकल और शाही महल के ख़ज़ानों में मिले, और
कफ़ीलों को भी साथ लिया और सामरिया को लौटा।
15 यहूआस के बाक़ी काम जो उसने किए और उसकी क़ुव्वत,
और जैसे शाह — ए — यहूदाह अमसियाह से लड़ा, इसलिए

क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?
16 और यहूआस अपने बाप दादा के साथ सो गया और इस्राईल
के बादशाहों के साथ सामरिया में दफ़न हुआ, और उसका बेटा
युरब'आम उसकी जगह बादशाह हुआ।
17 और शाह — ए — यहूदाह यूआस का बेटा अमसियाह
शाह — ए — इस्राईल यहूआख़ज़ के बेटे यहूआस के मरने के
बाद पन्द्रह बरस जीता रहा।
18 अमसियाह के बाक़ी काम, इसलिए क्या वह यहूदाह के
बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?
19 और उन्होंने येरूशलेम में उसके ख़िलाफ़ साज़िश की,
इसलिए वह लकीस को भागा; लेकिन उन्होंने लकीस तक उसका
पीछा करके वहीं उसे क़त्ल किया।
20 और वह उसे घोड़ों पर ले आए, और वह येरूशलेम में अपने
बाप — दादा के साथ दाऊद के शहर में दफ़न हुआ।
21 और यहूदाह के सब लोगों ने अज़रियाह' को जो सोलह
बरस का था, उसके बाप अमसियाह की जगह बादशाह बनाया।
22 और बादशाह के अपने बाप — दादा के साथ सो जाने के
बाद उसने ऐलात को बनाया, और उसे फिर यहूदाह की मुल्क में
दाख़िल कर लिया।
23 शाह — ए — यहूदाह यूआस के बेटे अमसियाह के पन्द्रहवें
बरस से शाह — ए — इस्राईल यूआस का बेटा युरब'आम
सामरिया में बादशाही करने लगा; उसने इकतालिस बरस
बादशाही की।
24 उसने ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया; वह नबात के बेटे
युरब'आम के उन सब गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह
कराया, बाज़ न आया।
25 और उसने ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा के उस बात के

मुताबिक़, जो उसने अपने बन्दे और नबी यूनाह — बिन —
अमित्ते के ज़रिए' जो जात हिफ़्र का था फ़रमाया था, इस्राईल
की हद को हमात के मदख़ल से मैदान के दरिया तक फिर पहुँचा
दिया।
26 इसलिए कि ख़ुदावन्द ने इस्राईल के दुख को देखा कि वह
बहुत सख़्त है', क्यूँकि न तो कोई बन्द किया हुआ, न आज़ाद छूटा
हुआ रहा और न कोई इस्राईल का मददगार था।
27 और ख़ुदावन्द ने यह तो नहीं फ़रमाया था कि मैं इस ज़मीन
पर से इस्राईल का नाम मिटा दूँगा; इसलिए उसने उनको यूआस
के बेटे युरब'आम के वसीले से रिहाई दी।
28 युरब'आम के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया और
उसकी क़ुव्वत, या'नी क्यूँकर उसने लड़ कर दमिश्क़ और हमात
को जो यहूदाह के थे, इस्राईल के लिए वापस ले लिया, इसलिए
क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा
नहीं?
29 और युरब'आम अपने बाप — दादा, या'नी इस्राईल के
बादशाहों के साथ सो गया; और उसका बेटा ज़करियाह उसकी
जगह बादशाह हुआ।

15

[illegible]

1 शाह — ए — इस्राईल युरब'आम के सत्ताइसवें बरस से शाह
— ए — यहूदाह अमसियाह का बेटा अज़रियाह सल्तनत करने
लगा।
2 जब वह सल्तनत करने लगा तो सोलह बरस का था, और
उसने येरूशलेम में बावन बरस सल्तनत की। उसकी माँ का नाम
यकूलियाह था, जो येरूशलेम की थी।
3 और उसने जैसा उसके बाप अमसियाह ने किया था, ठीक
उसी तरह वह काम किया जो ख़ुदावन्द की नज़र में नेक था;

4 तोभी ऊँचे मक़ाम ढाए न गए, और लोग अब तक ऊँचे
मक़ामों पर क़ुर्बानी करते और ख़ुशबू जलाते थे।
5 और बादशाह पर ख़ुदावन्द की ऐसी मार पड़ी कि वह अपने
मरने के दिन तक कोढ़ी रहा और अलग एक घर में रहता था।
और बादशाह का बेटा यूताम महल का मालिक था, और मुल्क
के लोगों की 'अदालत किया करता था।
6 और 'अज़रियाह के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया,
तो क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा
नहीं?
7 और 'अज़रियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
उन्होंने उसे दाऊद के शहर में उसके बाप — दादा के साथ दफ़न
किया; और उसका बेटा यूताम उसकी जगह बादशाह हुआ।
8 और शाह — ए — यहूदाह 'अज़रियाह के अठतीसवें साल
युरब'आम के बेटे ज़करियाह ने इस्राईल पर सामरिया में छ:
महीने बादशाही की।
9 और उसने ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया, जिस तरह
उसके बाप — दादा ने की थी; और नबात के बेटे युरब'आम के
गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया बाज़ न आया।
10 और यबीस के बेटे सलूम ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश की और
लोगों के सामने उसे मारा, और क़त्ल किया और उसकी जगह
बादशाह हो गया।
11 ज़करियाह के बाक़ी काम इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़
की किताब में लिखे हैं।
12 और ख़ुदावन्द का वह वा'दा जो उसने याहू से किया यही था
कि: “चौथी नस्ल तक तेरे फ़र्ज़न्द इस्राईल के तख़्त पर बैठेंगे।”
इसलिए वैसा ही हुआ।

13 शाह — ए — यहूदाह उज़्ज़ियाह के उन्तालीसवें बरस
यबीस का बेटा सलूम बादशाही करने लगा, और उसने सामरिया
में महीना भर सल्तनत की।
14 और जादी का बेटा मनाहिम तिरज़ा से चला और सामरिया
में आया, और यबीस के बेटे सलूम को सामरिया में मारा, और
क़त्ल किया और उसकी जगह बादशाह हो गया।
15 और सलूम के बाक़ी काम और जो साज़िश उसने की,
इसलिए देखो, वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब
में लिखे हैं।

[illegible]

16 फिर मनाहिम ने तिरज़ा से जाकर तिफ़सह को, और उन
सभों को जो वहाँ थे और उसकी हुदूद को मारा; और मारने की
वजह यह थी कि उन्होंने उसके लिए फाटक नहीं खोले थे; और
उसने वहाँ की सब हामिला 'औरतों को चीर डाला।
17 और शाह — ए — यहूदाह 'अज़रियाह के उन्तालीसवें बरस
से जादी का बेटा मनाहिम इस्राईल पर सल्तनत करने लगा, और
उसने सामरिया में दस बरस सल्तनत की।
18 उसने ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया और नबात के बेटे
युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया,
अपनी सारी उम्र बाज़ न आया।
19 और शाह — ए — असूर पूल उसके मुल्क पर चढ़ आया।
इसलिए मनाहिम ने हज़ार क़िन्तार' चाँदी पूल को नज़्र की, ताकि
वह उसकी दस्तगीरी करे और सल्तनत को उसके हाथ में मज़बूत
कर दे।
20 और मनाहिम ने ये नक़दी शाह — ए — असूर को देने के
लिए इस्राईल से या'नी सब बड़े — बड़े दौलतमन्दों से पचास
— पचास मिस्क़ाल हर शख़्स के हिसाब से जबरन ली। इसलिए
असूर का बादशाह लौट गया और उस मुल्क में न ठहरा।

21 मनाहिम के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया,
इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब
में लिखे नहीं?
22 और मनाहिम अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
उसका बेटा फक़ीहयाह उसकी जगह बादशाह हुआ।
23 शाह — ए — यहूदाह 'अज़रियाह के पचासवीं साल
मनाहिम का बेटा फक़ीयाह सामरिया में इस्राईल पर सल्तनत
करने लगा, और उसने दो बरस सल्तनत की।
24 उसने ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया; वह नबात के बेटे
युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया,
बाज़ न आया।
25 और फिक़ह — बिन — रमलियाह ने जो उसका एक सरदार
था, उसके ख़िलाफ़ साज़िश की और उसको सामरिया में बादशाह
के महल के मुहकम हिस्से में अरजूब और अरिया के साथ मारा,
और जिल'आदियों में से पचास मर्द उसके साथ थे, इसलिए वह
उसे क़त्ल करके उसकी जगह बादशाह हो गया।
26 फक़ीयाह के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया,
इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा है।
27 शाह — ए — यहूदाह 'अज़रियाह के बावनवें बरस से
फिक़ह — बिन — रमलियाह सामरिया में इस्राईल पर सल्तनत
करने लगा, और उसने बीस बरस सल्तनत की।
28 उसने ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया और नबात के बेटे
युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया,
बाज़ न आया।
29 शाह — ए — इस्राईल फिक़ह के अय्याम में शाह — ए
— असूर तिगलत पिलासर ने आकर अय्यून, और अबील बैत
मा'का, और यनूहा, और क़ादिस और हसूर और जिल'आद और
गलील, और नफ़्ताली के सारे मुल्क को ले लिया, और लोगों को
ग़ुलाम करके ग़ुलामी में ले गया।

30 और हूसी' — बिन ऐला ने फ़िक़ह — बिन — रमलियाह के
ख़िलाफ़ साज़िश की और उसे मारा, और क़त्ल किया और उसकी
जगह, उज़्ज़ियाह के बेटे यूताम के बीसवें बरस, बादशाह हो गया;
31 और फ़िक़ह के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया,
इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे हैं।

[illegible]

32 शाह — ए — इस्राईल रमलियाह के बेटे फ़िक़ह के दूसरे
साल से शाह — ए — यहूदाह उज़ियाह का बेटा यूताम सल्तनत
करने लगा।
33 जब वह सल्तनत करने लगा तो पच्चीस बरस का था,
उसने सोलह बरस येरूशलेम में सल्तनत की। उसकी माँ का नाम
यरूसा था, जो सदूक़ी की बेटी थी।
34 उसने वह काम किया जो ख़ुदावन्द की नज़र में भला है;
उसने सब कुछ ठीक वैसे ही किया जैसे उसके बाप 'उज़ियाह ने
किया था।
35 तोभी ऊँचे मक़ाम ढाए न गए लोग अभी ऊँचे मक़ामों पर
क़ुर्बानी करते और ख़ुशबू जलाते थे। ख़ुदावन्द के घर का बालाई
दरवाज़ा इसी ने बनाया।
36 यूताम के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए
क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा
नहीं?
37 उन ही दिनों में ख़ुदावन्द शाह — ए — अराम रज़ीन को
और फ़िक़ह — बिन — रमलियाह को, यहूदाह पर चढ़ाई करने
के लिए भेजने लगा।
38 यूताम अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और अपने बाप
दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफ़न हुआ; और
उसका बेटा आख़ज़ उसकी जगह बादशाह हुआ।

16

[illegible]

1 और रमलियाह के बेटे फ़िक़ह के सत्तरहवें बरस से शाह —
ए — यहूदाह यूताम का बेटा आख़ज़ सल्तनत करने लगा।
2 जब आख़ज़ सल्तनत करने लगा तो बीस बरस का था, और
उसने सोलह बरस येरूशलेम में बादशाही की। और उसने वह
काम न किया जो ख़ुदावन्द उसके ख़ुदा की नज़र में सही है, जैसा
उसके बाप दाऊद ने किया था।
3 बल्कि वह इस्राईल के बादशाहों के रास्ते पर चला और उसने
उन क़ौमों के नफ़रती दस्तूर के मुताबिक़, जिनको ख़ुदावन्द ने
बनी — इस्राईल के सामने से ख़ारिज कर दिया था, अपने बेटे को
भी आग में चलवाया।
4 और ऊँचे मक़ामों और टीलों पर और हर एक हरे दरख़्त के
नीचे उसने क़ुर्बानी की और ख़ुशबू जलाया।
5 तब शाह — ए — अराम रज़ीन और शाह — ए — इस्राईल
रमलियाह के बेटे फ़िक़ह ने लड़ने को येरूशलेम पर चढ़ाई की,
और उन्होंने आख़ज़ को घेर लिया लेकिन उस पर ग़ालिब न आ
सके।
6 उस वक़्त शाह — ए — अराम रज़ीन ने ऐलात को फ़तह
करके फिर अराम में शामिल कर लिया, और यहूदियों को ऐलात
से निकाल दिया; और अरामी ऐलात में आकर वहाँ बस गए जैसा
आज तक है।
7 इसलिए आख़ज़ ने शाह — ए — असूर तिगलत पिलासर के
पास क़ासिद रवाना किए और कहला भेजा, "मैं तेरा ख़ादिम और
बेटा हूँ, इसलिए तू आ और मुझ को शाह — ए — अराम के हाथ
से और शाह — ए — इस्राईल के हाथ से जो मुझ पर चढ़ आए
हैं, रिहाई दे।"

8 और आख़ज़ ने उस चाँदी और सोने को जो ख़ुदावन्द के घर में
और शाही महल के ख़ज़ानों में मिला, लेकर शाह — ए — असूर
के लिए नज़राना भेजा।
9 और शाह — ए — असूर ने उसकी बात मानी, चुनाँचे शाह
— ए — असूर ने दमिश्क़ पर लश्करकशी की और उसे ले लिया,
और वहाँ के लोगों को क़ैद करके क़ीर में ले गया और रज़ीन को
क़त्ल किया।
10 और आख़ज़ बादशाह, शाह — ए — असूर तिगलत
पिलासर की मुलाक़ात के लिए दमिश्क़ को गया, और उस मज़बह
को देखा जो दमिश्क़ में था; और आख़ज़ बादशाह ने उस मज़बह
का नक़्शा और उसकी सारी सन'अत का नमूना ऊरिय्याह काहिन
के पास भेजा।
11 और ऊरियाह काहिन ने ठीक उसी नमूने के मुताबिक़ जिसे
आख़ज़ ने दमिश्क़ से भेजा था, एक मज़बह बनाया। और आख़ज़
बादशाह के दमिश्क़ से लौटने तक ऊरिय्याह काहिन ने उसे तैयार
कर दिया।
12 जब बादशाह दमिश्क़ से लौट आया तो बादशाह ने मज़बह
को देखा, और बादशाह मज़बह के पास गया और उस पर क़ुर्बानी
पेश की।
13 उसने उस मज़बह पर अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानी और अपनी
नज़्र की क़ुर्बानी जलाई, और अपना तपावन तपाया और अपनी
सलामती के ज़बीहों का ख़ून उसी मज़बह पर छिड़का।
14 और उसने पीतल का वह मज़बह जो ख़ुदावन्द के आगे था,
हैकल के सामने से या'नी अपने मज़बह और ख़ुदावन्द की हैकल
के बीच में से, उठवाकर उसे अपने मज़बह के उत्तर की तरफ़ रखवा
दिया।
15 और आख़ज़ बादशाह ने ऊरिय्याह काहिन को हुक्म दिया,
“बड़े मज़बह पर सुबह की सोख़्तनी क़ुर्बानी, और शाम की नज़्र
की क़ुर्बानी, और बादशाह की सोख़्तनी क़ुर्बानी, और उसकी नज़्र

की क़ुर्बानी, और ममलुकत के सब लोगों की सोख़्तनी क़ुर्बानी,
और उनकी नज़्र की क़ुबानी, और उनका तपावन चढ़ाया कर, और
सोख़्तनी क़ुर्बानी का सारा ख़ून, और ज़बीहे का सारा ख़ून उस पर
छिड़क कर; और पीतल का वह मज़बह मेरे सवाल करने के लिए
रहेगा।”
16 इसलिए जो कुछ आख़ज़ बादशाह ने फ़रमाया, ऊरिय्याह
काहिन ने वह सब किया।
17 और आख़ज़ बादशाह ने कुर्सियों के किनारों को काट डाला,
और उनके ऊपर के हौज़ को उनसे जुदा कर दिया; और उस बड़े
हौज़ को पीतल के बैलों पर से जो उसके नीचे थे उतार कर पत्थरों
के फ़र्श पर रख दिया।
18 और उसने उस रास्ते को जिस पर छत थी, और जिसे उन्होंने
सबत के दिन के लिए हैकल के अन्दर बनाया था, और बादशाह
के आने के रास्ते को जो बाहर था, शाह — ए — असूर की वजह
से ख़ुदावन्द के घर में शामिल कर दिया'।
19 और आख़ज़ के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया,
इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब
में लिखा नहीं?
20 और आख़ज़ अपने बाप दादा के साथ सो गया, और दाऊद
के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफ़न हुआ; और उसका
बेटा हिज़क़ियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

17

[illegible]

1 शाह — ए — यहूदाह आख़ज़ के बारहवें बरस से ऐला का
बेटा हूसी'अ इस्राईल पर सामरिया में सल्तनत करने लगा, और
उसने नौ बरस सल्तनत की।
2 उसने ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया, तोभी इस्राईल के
उन बादशाहों की तरह नहीं जो उससे पहले हुए।

3 शाह — ए — असूर सलमनसर ने इस पर चढ़ाई की, और
हूसी'अ उसका ख़ादिम हो गया और उसके लिए हदिया लाया।
4 और शाह — ए — असूर ने हूसी'अ की साज़िश मा'लूम कर
ली, क्यूँकि उसने शाह — ए — मिस्र के पास इसलिए क़ासिद
भेजे, और शाह — ए — असूर को हदिया न दिया जैसा वह साल
— ब — साल देता था, इसलिए शाह — ए — असूर ने उसे बन्द
कर दिया और क़ैदखाने में उसके बेड़ियाँ डाल दीं।
5 शाह — ए — असूर ने सारी ममलुकत पर चढ़ाई की, और
सामरिया को जाकर तीन बरस उसे घेरे रहा।
6 और हूसी'अ के नौवें बरस शाह — ए — असूर ने सामरिया
को ले लिया और इस्राईल को ग़ुलाम करके असूर में ले गया, और
उनको ख़लह में, और जौज़ान की नदी ख़ाबूर पर, और मादियों के
शहरों में बसाया।
7 और ये इसलिए हुआ कि बनी — इस्राईल ने ख़ुदावन्द अपने
ख़ुदा के ख़िलाफ़, जिसने उनको मुल्क — ए — मिस्र से निकालकर
शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन के हाथ से रिहाई दी थी, गुनाह
किया और ग़ैर — मा'बूदों का ख़ौफ़ माना।
8 और उन क़ौमों के तौर पर जिनको ख़ुदावन्द ने बनी —
इस्राईल के आगे से ख़ारिज किया, और इस्राईल के बादशाहों के
तौर पर जो उन्होंने ख़ुद बनाए थे चलते रहे।
9 और बनी इस्राईल ने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के ख़िलाफ़
छिपकर वह काम किए जो भले न थे, और उन्होंने अपने सब
शहरों में, निगहबानों के बुर्ज से फ़सीलदार शहर तक, अपने लिए
ऊँचे मक़ाम बनाए
10 और हर एक ऊँचे पहाड़ पर, और हर एक हरे दरख़्त के नीचे
उन्होंने अपने लिए सुतूनों और यसीरतों को खड़ा किया।
11 और वहीं उन सब ऊँचे मक़ामों पर, उन क़ौमों की तरह
जिनको ख़ुदावन्द ने उनके सामने से दफ़ा' किया, ख़ुशबू जलाया

और ख़ुदावन्द को ग़ुस्सा दिलाने के लिए शरारतें कीं;
12 और बुतों की इबादत की, जिसके बारे में ख़ुदावन्द ने उनसे
कहा था, “तुम ये काम न करना।”
13 तोभी ख़ुदावन्द सब नबियों और ग़ैबबीनों के ज़रिए' इस्राईल
और यहूदाह को आगाह करता रहा, “तुम अपनी बुरी राहों से
बाज़ आओ, और उस सारी शरी'अत के मुताबिक़, जिसका हुक्म
मैंने तुम्हारे बाप — दादा को दिया और जिसे मैंने अपने बन्दों
नबियों के ज़रिए' तुम्हारे पास भेजा है, मेरे अहकाम और क़ानून
को मानो।”
14 बावजूद इसके उन्होंने न सुना, बल्कि अपने बाप — दादा
की तरह जो ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा पर ईमान नहीं लाए थे,
गर्दनकशी की,
15 और उसके क़ानून को और उसके 'अहद को, जो उसने उनके
बाप — दादा से बाँधा था, और उसकी शहादतों को जो उसने
उनको दी थीं रद्द किया; और बेकार बातों के पैरौ होकर निकम्मे
हो गए, और अपने आस — पास की क़ौमों की पैरवी की, जिनके
बारे में ख़ुदावन्द ने उनको ताकीद की थी कि वह उनके से काम न
करें।
16 और उन्होंने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सब अहकाम छोड़
कर अपने लिए ढाली हुई मूरतें या'नी दो बछड़े बना लिए, और
यसीरत तैयार की, और आसमानी फ़ौज की इबादत की, और बा'ल
की इबादत की।
17 और उन्होंने अपने बेटे और बेटियों को आग में चलवाया,
और फ़ालगीरी और जादूगरी से काम लिया और अपने को बेच
डाला, ताकि ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह करके उसे ग़ुस्सा
दिलाएँ।
18 इसलिए ख़ुदावन्द इस्राईल से बहुत नाराज़ हुआ, और
अपनी नज़र से उनको दूर कर दिया; इसलिए यहूदाह के क़बीले

के अलावा और कोई न छूटा।
19 यहूदाह ने भी ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के अहकाम न माने,
बल्कि उन तौर तरीक़ों पर चले जिनको इस्राईल ने बनाया था।
20 तब ख़ुदावन्द ने इस्राईल की सारी नस्ल को रद्द किया, और
उनको दुख दिया और उनको लुटेरों के हाथ में करके आख़िरकार
उनको अपनी नज़र से दूर कर दिया।
21 क्यूँकि उसने इस्राईल को दाऊद के घराने से जुदा किया,
और उन्होंने नबात के बेटे युरब'आम को बादशाह बनाया, और
युरब'आम ने इस्राईल को ख़ुदावन्द की पैरवी से दूर किया और
उनसे बड़ा गुनाह कराया।
22 और बनी इस्राईल उन सब गुनाहों की जो युरब'आम ने
किए, पैरवी करते रहे; वह उनसे बाज़ न आए।
23 यहाँ तक कि ख़ुदावन्द ने इस्राईल को अपनी नज़र से दूर कर
दिया, जैसा उसने अपने सब बन्दों के ज़रिए', जो नबी थे फ़रमाया
था। इसलिए इस्राईल अपने मुल्क से असूर को पहुँचाया गया,
जहाँ वह आज तक है।

[illegible]

24 और शाह — ए — असूर ने बाबुल और कूताह और 'अव्वा
और हमात और सिफ़रवाइम के लोगों को लाकर बनी — इस्राईल
की जगह सामरिया के शहरों में बसाया। इसलिए वह सामरिया
के मालिक हुए, और उसके शहरों में बस गए।
25 और अपने बस जाने के शुरू' में उन्होंने ख़ुदावन्द का ख़ौफ़
न माना; इसलिए ख़ुदावन्द ने उनके बीच शेरों को भेजा, जिन्होंने
उनमें से कुछ को मार डाला।
26 तब उन्होंने शाह — ए — असूर से ये कहा, "जिन क़ौमों
को तूने ले जाकर सामरिया के शहरों में बसाया है, वह उस मुल्क
के ख़ुदा के तरीक़े से वाक़िफ़ नहीं हैं; चुनाँचे उसने उनमें शेर भेज

दिए हैं और देख, वह उनको फाड़ते हैं, इसलिए कि वह उस मुल्क
के ख़ुदा के तरीक़े से वाक़िफ़ नही हैं।"
27 तब असूर के बादशाह ने ये हुक्म दिया, "जिन काहिनों को
तुम वहाँ से ले आए हो, उनमें से एक को वहाँ ले जाओ, और वह
जाकर वहीं रहे और ये काहिन उनको उस मुल्क के ख़ुदा का तरीक़ा
सिखाए।"
28 इसलिए उन काहिनों में से, जिनको वह सामरिया ले गए
थे, एक काहिन आकर बैतएल में रहने लगा, और उनको सिखाया
कि उनको ख़ुदावन्द का ख़ौफ़ क्यूँकर मानना चाहिए।
29 इस पर भी हर क़ौम ने अपने मा'बूद बनाए, और उनको
सामरियों के बनाए हुए ऊँचे मक़ामों के बुतख़ानों में रख्खा; हर
क़ौम ने अपने शहर में जहाँ उसकी सुकूनत थी ऐसा ही किया।
30 इसलिए बाबुलियों ने सुकात बनात को, और कूतियों ने
नेरगुल को, और हमातियों ने असीमा को,
31 और 'अवाइयों ने निबहाज़ और तरताक़ को बनाया; और
सिफ़वियों ने अपने बेटों को अदरम्मलिक और 'अनम्मलिक के
लिए, जो सिफ़वाइम के मा'बूद थे, आग में जलाया।
32 इस तरह वह ख़ुदावन्द से भी डरते थे और अपने लिए ऊँचे
मक़ामों के काहिन भी अपने ही में से बना लिए, जो ऊँचे मक़ामों
के बुतख़ानों में उनके लिए क़ुर्बानी पेश करते थे।
33 इसलिए वह ख़ुदावन्द से भी डरते थे और अपनी क़ौमों के
दस्तूर के मुताबिक़, जिनमें से वह निकाल लिए गए थे, अपने —
अपने मा'बूद की इबादत भी करते थे।
34 आज के दिन तक वह पहले दस्तूर पर चलते हैं, वह ख़ुदावन्द
से डरते नहीं, और न तो अपने आईन — ओ — क़वानीन पर और
न उस शरा' और फ़रमान पर चलते हैं, जिसका हुक्म ख़ुदावन्द ने
या'क़ूब की नसल को दिया था, जिसका नाम उसने इस्राईल रखा
था।

35 उन ही से ख़ुदावन्द ने 'अहद करके उनको ये ताकीद की थी,
“तुम ग़ैर — मा'बूदों से न डरना, और न उनको सिज्दा करना, न
इबादत करना, और न उनके लिए क़ुर्बानी करना;
36 बल्कि ख़ुदावन्द जो बड़ी क़ुव्वत और बलन्द बाज़ू से तुम
को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, तुम उसी से डरना और
उसी को सिज्दा करना और उसी के लिए क़ुर्बानी पेश करना।
37 और जो — जो क़ानून, और रवायत, और जो शरी'अत,
और हुक्म उसने तुम्हारे लिए लिखे, उनको हमेशा मानने के लिए
एहतियात रखना; और तुम ग़ैर — मा'बूदों से न डरना,
38 और उस 'अहद को जो मैंने तुम से किया है तुम भूल न जाना;
और न तुम ग़ैर — मा'बूदों का ख़ौफ़ मानना;
39 बल्कि तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना, और वह
तुम को तुम्हारे सब दुश्मनों के हाथ से छुड़ाएगा।”
40 लेकिन उन्होंने न माना, बल्कि अपने पहले दस्तूर के
मुताबिक़ करते रहे।
41 इसलिए ये क़ौमें ख़ुदावन्द से भी डरती रहीं, और अपनी
खोदी हुई मूरतों को भी पूजती रहीं; इसी तरह उनकी औलाद
और उनकी औलाद की नसल भी, जैसा उनके बाप — दादा करते
थे, वैसा वह भी आज के दिन तक करती हैं।

18

[illegible]

1 और शाह — ए इस्राईल होशे' बिन ऐला के तीसरे साल ऐसा
हुआ कि शाह — ए — यहूदाह आख़ज़ का बेटा हिज़क़ियाह
सल्तनत करने लगा।
2 जब वह सल्तनत करने लगा तो पच्चीस बरस का था, और
उसने उन्तीस बरस येरूशलेम में सल्तनत की। उसकी माँ का नाम
अबी था, जो ज़करियाह की बेटी थी।

3 और जो — जो उसके बाप दाऊद ने किया था, उसने ठीक उसी
के मुताबिक़ वह काम किया जो ख़ुदावन्द की नज़र में अच्छा था।
4 उसने ऊँचे मक़ामों को दूर कर दिया, और सुतूनों को तोड़ा
और यसीरत को काट डाला; और उसने पीतल के साँप को जो
मूसा ने बनाया था चकनाचूर कर दिया, क्यूँकि बनी — इस्राईल
उन दिनों तक उसके आगे ख़ुशबू जलाते थे; और उसने उसका नाम
नहुश्तान' रखा।
5 वह ख़ुदावन्द इस्राईल के ख़ुदा पर भरोसा करता था, ऐसा कि
उसके बाद यहूदाह के सब बादशाहों में उसकी तरह एक न हुआ,
और न उससे पहले कोई हुआ था।
6 क्यूँकि वह ख़ुदावन्द से लिपटा रहा और उसकी पैरवी करने
से बाज़ न आया; बल्कि उसके हुक्मों को माना जिनको ख़ुदावन्द
ने मूसा को दिया था।
7 और ख़ुदावन्द उसके साथ रहा और जहाँ कहीं वह गया
कामयाब हुआ; और वह शाह — ए — असूर से फिर गया और
उसकी पैरवी न की।
8 उसने फ़िलिस्तियों को ग़ज़्ज़ा और उसकी सरहदों तक,
निगहबानों के बुर्ज से फ़सीलदार शहर तक मारा।
9 हिज़क़ियाह बादशाह के चौथे बरस जो शाह — ए —
इस्राईल हूसे'अ — बिन — ऐला का सातवाँ बरस था, ऐसा हुआ
कि शाह — ए — असूर सलमनसर ने सामरिया पर चढ़ाई की,
और उसको घेर लिया।
10 और तीन साल के आख़िर में उन्होंने उसको ले लिया; या'नी
हिज़क़ियाह के छठे साल जो शाह — ए — इस्राईल हूसे'अ का
नौवाँ बरस था, सामरिया ले लिया गया।
11 और शाह — ए — असूर इस्राईल को ग़ुलाम करके असूर
को ले गया, और उनको ख़लह में और जौज़ान की नदी ख़ाबूर पर,
और मादियों के शहरों में रख्खा,

12 इसलिए कि उन्होंने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की बात न मानी,
बल्कि उसके 'अहद को या'नी उन सब बातों को जिनका हुक्म
ख़ुदा के बन्दे मूसा ने दिया था मुख़ालिफ़त की, और न उनको
सुना न उन पर 'अमल किया।
13 हिज़क़ियाह बादशाह के चौदहवें बरस शाह — ए — असूर
सनहेरिब ने यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों पर चढ़ाई की और
उनको ले लिया।
14 और शाह — ए — यहूदाह हिज़क़ियाह ने शाह — ए —
असूर को लकीस में कहला भेजा, "मुझ से ख़ता हुई, मेरे पास से
लौट जा; जो कुछ तू मेरे सिर करे मैं उसे उठाऊँगा।" इसलिए
शाह — ए — असूर ने तीन सौ क़िन्तार चाँदी और तीस क़िन्तार
सोना शाह — ए — यहूदाह हिज़क़ियाह के ज़िम्मे लगाया।
15 और हिज़क़ियाह ने सारी चाँदी जो ख़ुदावन्द के घर और
शाही महल के ख़ज़ानों में मिली उसे दे दी।
16 उस वक़्त हिज़क़ियाह ने ख़ुदावन्द की हैकल के दरवाज़ों
का और उन सुतूनों पर का सोना, जिनको शाह — ए — यहूदाह
हिज़क़ियाह ने ख़ुद मंढ़वाया था, उतरवा कर शाह — ए — असूर
को दे दिया।
17 फिर भी शाह — ए — असूर ने तरतान और रब सारिस और
रबशाक़ी को लकीस से बड़े लश्कर के साथ हिज़क़ियाह बादशाह
के पास येरूशलेम को भेजा। इसलिए वह चले और येरूशलेम को
आए, और जब वहाँ पहुँचे तो जाकर ऊपर के तालाब की नाली के
पास, जो धोबियों के मैदान के रास्ते पर है, खड़े हो गए।
18 और जब उन्होंने बादशाह को पुकारा, तो इलियाक़ीम —
बिन — ख़िलक़ियाह जो घर का दीवान था और शबनाह मुन्शी
और आसफ़ मुहर्रिर का बेटा यूआख़ उनके पास निकल कर आए।
19 और रबशाक़ी ने उनसे कहा, "तुम हिज़क़ियाह से कहो, कि
मलिक — ए — मुअज़्ज़म शाह — ए — असूर यूँ फ़रमाता है,

'तू क्या भरोसा किए बैठा है?
20 तू कहता तो है, लेकिन ये सिर्फ़ बातें ही बातें हैं कि जंग की
मसलहत भी है और हौसला भी। आख़िर किसके भरोसे पर तू ने
मुझ से सरकशी की है?
21 देख, तुझे इस मसले हुए सरकण्डे के 'असा या'नी मिस्र पर
भरोसा है; उस पर अगर कोई टेक लगाए, तो वह उसके हाथ में
गड़ जाएगा और उसे छेद देगा।" शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन
उन सब के लिए जो उस पर भरोसा करते हैं, ऐसा ही है।
22 और अगर तुम मुझ से कहो कि हमारा भरोसा ख़ुदावन्द
हमारे ख़ुदा पर है, तो क्या वह वही नहीं है, जिसके ऊँचे मक़ामों
और मज़बहों को हिज़क़ियाह ने दूर करके यहूदाह और येरूशलेम
से कहा है, कि तुम येरूशलेम में इस मज़बह के आगे सिज्दा किया
करो?'
23 इसलिए अब ज़रा मेरे आक़ा शाह — ए — असूर के साथ
शर्त बाँध और मैं तुझे दो हज़ार घोड़े दूँगा, बशर्ते कि तू अपनी
तरफ़ से उन पर सवार चढ़ा सके।
24 भला फिर तू क्यूँकर मेरे आक़ा के अदना मुलाज़िमों में से
एक सरदार का भी मुँह फेर सकता है, और रथों और सवारों के
लिए मिस्र पर भरोसा रखता है?
25 और क्या अब मैंने ख़ुदावन्द के बिना कहे ही इस मक़ाम को
ग़ारत करने के लिए इस पर चढ़ाई की है? ख़ुदावन्द ही ने मुझ से
कहा कि इस मुल्क पर चढ़ाई कर और इसे बर्बाद कर दे।"
26 तब इलियाक़ीम — बिन — ख़िलक़ियाह, और शबनाह,
और यूआख़ ने रबशाक़ी से अर्ज़ की कि "अपने ख़ादिमों से अरामी
ज़बान में बात कर, क्यूँकि हम उसे समझते हैं; और उन लोगों के
सुनते हुए जो दीवार पर हैं, यहूदियों की ज़बान में बातें न कर।"
27 लेकिन रबशाक़ी ने उनसे कहा, "क्या मेरे आक़ा ने मुझे ये
बातें कहने को तेरे आक़ा के पास, या तेरे पास भेजा है? क्या

उसने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा, जो तुम्हारे साथ अपनी
ही नजासत खाने और अपना ही क़ारूरा पीने को दीवार पर बैठे
हैं?"
28 फिर रबशाक़ी खड़ा हो गया और यहूदियों की ज़बान में
बलन्द आवाज़ से ये कहने लगा, "मलिक — ए — मुअज़्ज़म
शाह — ए — असूर का कलाम सुनो,
29 बादशाह यूँ फ़रमाता है, 'हिज़क़ियाह तुम को धोका न दे,
क्यूँकि वह तुम को उसके हाथ से छुड़ा न सकेगा।
30 और न हिज़क़ियाह ये कहकर तुम से ख़ुदावन्द पर भरोसा
कराए, कि ख़ुदावन्द ज़रूर हमको छुड़ाएगा और ये शहर शाह
— ए — असूर के हवाले न होगा।
31 हिज़क़ियाह की न सुनो। क्यूँकि शाह — ए — असूर यूँ
फ़रमाता है कि तुम मुझसे सुलह कर लो और निकलकर मेरे पास
आओ, और तुम में से हर एक अपनी ताक और अपने अंजीर के
दरख़्त का फल खाता और अपने हौज़ का पानी पीता रहे।
32 जब तक मैं आकर तुम को ऐसे मुल्क में न ले जाऊँ, जो
तुम्हारे मुल्क की तरह ग़ल्ला और मय का मुल्क, रोटी और
ताकिस्तानों का मुल्क, ज़ैतूनी तेल और शहद का मुल्क है; ताकि
तुम जीते रहो, और मर न जाओ; इसलिए हिज़क़ियाह की
न सुनना, जब वह तुमको ये ता'लीम दे कि ख़ुदावन्द हमको
छुड़ाएगा।
33 क्या क़ौमों के मा'बूदों में से किसी ने अपने मुल्क को शाह
— ए — असूर के हाथ से छुड़ाया है?
34 हमात और अरफ़ाद के मा'बूद कहाँ हैं? और सिफ़वाइम और
हेना' और इवाह के मा'बूद कहाँ हैं? क्या उन्होंने सामरिया को मेरे
हाथ से बचा लिया?
35 और मुल्कों के तमाम मा'बूदों में से किस — किस ने अपना
मुल्क मेरे हाथ से छुड़ा लिया, जो यहोवा येरूशलेम को मेरे हाथ

से छुड़ा लेगा?”
36 लेकिन लोग ख़ामोश रहे और उसके जवाब में एक बात भी
न कही, क्यूँकि बादशाह का हुक्म यह था कि उसे जवाब न देना।
37 तब इलियाक़ीम — बिन — ख़िलक़ियाह जो घर का दीवान
था, और शबनाह मुन्शी, और यूआख़ बिन — आसफ़ मुहर्रिर
अपने कपड़े चाक किए हुए हिज़क़ियाह के पास आए और
रबशाक़ी की बातें उसे सुनाई।

19

[illegible]

1 जब हिज़क़ियाह बादशाह ने यह सुना, तो अपने कपड़े फाड़े
और टाट ओढ़कर ख़ुदावन्द के घर में गया।
2 और उसने घर के दीवान और इलियाक़ीम और शबनाह मुन्शी
और काहिनों के बुज़ुर्गों को टाट उढ़ाकर आमूस के बेटे यसा'याह
नबी के पास भेजा।
3 और उन्होंने उससे कहा, हिज़क़ियाह यूँ कहता है, कि आज
का दिन दुख, और मलामत, और तौहीन का दिन है; क्यूँकि बच्चे
पैदा होने पर हैं, लेकिन विलादत की ताक़त नहीं।
4 शायद ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा रबशाक़ी की सब बातें सुने जिसको
उसके आक़ा शाह — ए — असूर ने भेजा है, कि “ज़िन्दा ख़ुदा की
तौहीन करे और जो बातें ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने सुनी हैं उन पर वह
मलामत करेगा। इसलिए तू उस बक़िया के लिए जो मौजूद है
दुआ कर।”
5 इसलिए हिज़क़ियाह बादशाह के मुलाज़िम यसा'याह के
पास आए।
6 यसा'याह ने उनसे कहा, “तुम अपने मालिक से यूँ कहना,
'ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू उन बातों से जो तूने सुनी हैं, जिनसे
शाह — ए — असूर के मुलाज़िमों ने मेरी बुराई की है, न डर।

7 देख, मैं उसमें एक रूह डाल दूँगा, और वह एक अफ़वाह
सुनकर अपने मुल्क को लौट जाएगा, और मैं उसे उसी के मुल्क
में तलवार से मरवा डालूँगा।"
8 इसलिए रबशाक़ी लौट गया और उसने शाह — ए — असूर
को लिबनाह से लड़ते पाया, क्यूँकि उसने सुना था कि वह लकीस
से चला गया है;
9 और जब उसने कूश के बादशाह तिरहाक़ा के ज़रिए' ये कहते
सुना कि "देख, वह तुझसे लड़ने को निकला है," तो उसने फिर
हिज़क़ियाह के पास क़ासिद रवाना किए और कहा,
10 कि "शाह — ए — यहूदाह हिज़क़ियाह से इस तरह कहना,
'तेरा ख़ुदा, जिस पर तेरा भरोसा है, तुझे यह कहकर धोखा न दे कि
येरूशलेम शाह — ए — असूर के क़ब्ज़े में नहीं किया जाएगा।
11 देख, तूने सुना है कि असूर के बादशाहों ने तमाम मुमालिक
को बिल्कुल ग़ारत करके उनका क्या हाल बनाया है; इसलिए
क्या तू बचा रहेगा?
12 क्या उन क़ौमों के मा'बूदों ने उनको, या'नी जौज़ान और
हारान और रसफ़ और बनी — 'अदन जो तिल्लसार में थे, जिनको
हमारे बाप — दादा ने बर्बाद किया, छुड़ाया?
13 हमात का बादशाह और अरफ़ाद का बादशाह, और शहर
सिफ़वाइम और हेना' और इवाह का बादशाह कहाँ है?"
14 हिज़क़ियाह ने क़ासिदों के हाथ से ख़त लिया और उसे पढ़ा,
और हिज़क़ियाह ने ख़ुदावन्द के घर में जाकर उसे ख़ुदावन्द के
सामने फैला दिया।
15 और हिज़क़ियाह ने ख़ुदावन्द के सामने इस तरह दुआ की, ऐ
ख़ुदावन्द, इस्राईल के ख़ुदा, करूबियों के ऊपर बैठने वाले! तू ही
अकेला ज़मीन की सब सल्तनतों का ख़ुदा है। तू ने ही आसमान
और ज़मीन को पैदा किया।
16 ऐ ख़ुदावन्द, कान लगा और सुन! ऐ ख़ुदावन्द, अपनी आँखें

खोल और देख; और सनहेरिब की बातों को, जिनसे ज़िन्दा ख़ुदा
की तौहीन करने के लिए उसने इस आदमी को भेजा है, सुन ले।
17 ऐ ख़ुदावन्द, असूर के बादशाहों ने दर हक़ीक़त क़ौमों को
उनके मुल्कों समेत तबाह किया:
18 और उनके मा'बूदों को आग में डाला क्यूँकि वह ख़ुदा न
थे, बल्कि आदमियों की दस्तकारी, या'नी लकड़ी और पत्थर थे;
इसलिए उन्होंने उनको बर्बाद किया है।
19 इसलिए अब ऐ ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा मैं तेरी मिन्नत करता
हूँ, कि तू हमको उसके हाथ से बचा ले, ताकि ज़मीन की सब
सल्तनतें जान लें कि तू ही अकेला ख़ुदावन्द ख़ुदा है।"
20 तब यसा'याह — बिन — आमूस ने हिज़क़ियाह को कहला
भेजा कि ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: चूँकि तू ने
शाह — ए — असूर सनहेरिब के ख़िलाफ़ मुझसे दू'आ की है, मैंने
तेरी सुन ली।
21 इसलिए ख़ुदावन्द ने उसके हक़ में यूँ फ़रमाया कि कुँवारी
दुख़्तरें सिय्यून ने तुझे हक़ीर जाना और तेरा मज़ाक़ उड़ाया।
22 येरूशलेम की बेटी ने तुझ पर सर हिलाया है, तूने किसकी
तौहीन — ओ — बुराई की है? तूने किसके ख़िलाफ़ अपनी
आवाज़ बलन्द की, और अपनी आँखें ऊपर उठाई? इस्राईल के
क़ुद्दूस के ख़िलाफ़!
23 तूने अपने क़ासिदों के ज़रिए' से ख़ुदावन्द की तौहीन की,
और कहा, कि मैं बहुत से रथों को साथ लेकर पहाड़ों की चोटियों
पर, बल्कि लुबनान के वस्ती हिस्सों तक चढ़आया हूँ; और मैं
उसके ऊँचे — ऊँचे देवदारों और अच्छे से अच्छे सनोबर के
दरख़्तों को काट डालूँगा; और मैं उसके दूर से दूर मक़ाम में, जहाँ
उसकी बेशक़ीमती ज़मीन का जंगल है घुसा चला जाऊँगा।
24 मैंने जगह — जगह का पानी खोद — खोद कर पिया है और
मैं अपने पाँव के तलवे से मिस्र की सब नदियाँ सुखा डालूँगा।

25 क्या तू ने नहीं सुना कि मुझे यह किए हुए मुद्दत हुई और मैने
इसे गुज़रे दिनों में ठहरा दिया था? अब मैने उसको पूरा किया
है कि तू फ़सीलदार शहरों को उजाड़ कर खंडर बना देने के लिए
खड़ा हो।
26 इसी वजह से उनके बाशिन्दे कमज़ोर हुए और वह घबरा
गए, और शर्मिन्दा हुए वह मैदान की घास और हरी पौद और
छतों पर की घास, और उस अनाज की तरह हो गए, जो बढ़ने से
पहले सूख जाए।
27 "लेकिन मैं तेरी मजलिस और आमद — ओ — रफ़्त और
तेरा मुझ पर झुंझलाना मैं जानता हूँ।
28 तेरे मुझ पर झंझलाने की वजह से, और इसलिए कि तेरा
घमण्ड मेरे कानों तक पहुँचा है, मैं अपनी नकेल तेरी नाक में, और
अपनी लगाम तेरे मुँह में डालूँगा; और तू जिस रास्ते से आया है,
मैं तुझे उसी रास्ते से वापस लौटा दूँगा।
29 "और तेरे लिए ये निशान होगा कि तुम इस साल वह चीज़ें
जो ख़ुद से उगती हैं, और दूसरे साल वह चीज़ें जो उनसे पैदा
हों खाओगे; और तीसरे साल तुम बोना और काटना, और बाग़
लगाकर उनका फल खाना।
30 और वह जो यहूदाह के घराने से बचा रहा है फिर नीचे की
तरफ़ जड़ पकड़ेगा और ऊपर कि तरफ़ फल लाएगा।
31 क्यूँकि एक बक़िया येरूशलेम से, और वह जो बच रहे हैं
कोह — ए — सिय्यून से निकलेंगे। ख़ुदावन्द की ग़य्यूरी ये कर
दिखाएगी।
32 "इसलिए ख़ुदावन्द शाह — ए — असूर के हक़ में यूँ
फ़रमाता है कि वह इस शहर में आने, या यहाँ तीर चलाने न
पाएगा; वह न तो सिपर लेकर उसके सामने आने, और न उसके
मुक़ाबिल दमदमा बाँधने पाएगा।
33 बल्कि ख़ुदावन्द फ़रमाता है कि जिस रास्ते से वह आया,

उसी रास्ते से लौट जाएगा; और इस शहर में आने न पाएगा।
34 क्यूँकि मैं अपनी ख़ातिर और अपने बन्दे दाऊद की ख़ातिर
इस शहर की हिमायत करूँगा ताकि इसे बचा लें।"
35 इसलिए उसी रात को ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते ने निकल कर
असूर की लश्करगाह में एक लाख पचासी हज़ार आदमी मार
डाले, और सुबह को जब लोग सवेरे उठे तो देखा, कि वह सब
मरे पड़े हैं।
36 तब शाह — ए — असूर सनहेरिब वहाँ से चला गया और
लौटकर नीनवा में रहने लगा।
37 और जब वह अपने मा'बूद निसरूक के बुतख़ाने में इबादत
कर रहा था, तो अदरम्मलिक और शराज़र ने उसे तलवार से क़त्ल
किया, और अरारात की सरज़मीन को भाग गए। और उसका बेटा
असरहद्दून उसकी जगह बादशाह हुआ।

20

[illegible]

1 उन ही दिनों में हिज़क़ियाह ऐसा बीमार पड़ा कि मरने के
क़रीब हो गया तब यसायाह नबी आमूस के बेटे ने उसके पास
आकर उस से कहा ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि "तू अपने घर का
इन्तज़ाम कर दे; क्यूँकि तू मर जाएगा और बचने का नहीं।"
2 तब उसने अपना चेहरा दीवार की तरफ़ करके ख़ुदावन्द से
यह दुआ की,
3 "ऐ ख़ुदावन्द, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, याद फ़रमा कि मैं तेरे
सामने सच्चाई और पूरे दिल से चलता रहा हूँ, और जो तेरी नज़र
में भला है वही किया है।" और हिज़क़ियाह बहुत रोया।
4 और ऐसा हुआ कि यसा'याह निकल कर शहर के बीच के
हिस्से तक पहुँचा भी न था कि ख़ुदावन्द का कलाम उस पर
नाज़िल हुआ:

5 “लौट, और मेरी क़ौम के पेशवा हिज़क़ियाह से कह, कि
ख़ुदावन्द तेरे बाप दाऊद का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: मैंने तेरी दुआ
सुनी, और मैंने तेरे आँसू देखे। देख, मैं तुझे शिफ़ा दूँगा, और तीसरे
दिन तू ख़ुदावन्द के घर में जाएगा।
6 और मैं तेरी उम्र पन्द्रह साल और बढ़ा दूँगा, और मैं तुझ को
और इस शहर को शाह — ए — असूर के हाथ से बचा लूँगा, और
मैं अपनी ख़ातिर और अपने बन्दे दाऊद की ख़ातिर, इस शहर की
हिमायत करूँगा।”
7 और यसा'याह ने कहा, “अंजीरों की टिकिया लो।” इसलिए
वह उन्होंने उसे लेकर फोड़े पर बाँधा, तब वह अच्छा हो गया।
8 हिज़क़ियाह ने यसा'याह से पूछा, “इसका क्या निशान होगा
कि ख़ुदावन्द मुझे सेहत बख़्शेगा, और मैं तीसरे दिन ख़ुदावन्द के
घर में जाऊँगा?”
9 यसा'याह ने जवाब दिया, “इस बात का, कि ख़ुदावन्द ने जिस
काम को कहा है उसे वह करेगा, ख़ुदावन्द की तरफ़ से तेरे लिए
निशान ये होगा कि साया या दस दर्जे आगे को जाए, या दस दर्जे
पीछे की लौटे।”
10 और हिज़क़ियाह ने जवाब दिया, “ये तो छोटी बात है कि
साया दस दर्जे आगे की जाए, इसलिए यूँ नहीं बल्कि साया दस
दर्जे पीछे को लौटे।”
11 तब यसा'याह नबी ने ख़ुदावन्द से दुआ की; इसलिए उसने
साये को आख़ज़ की धूप घड़ी में दस दर्जे, या'नी जितना वह ढल
चुका था उतना ही पीछे को लौटा दिया।
12 उस वक़्त शाह — ए — बाबुल बरूदक बलादान — बिन —
बलादान ने हिज़क़ियाह के पास नामा और तहाइफ़ भेजे; क्यूँकि
उसने सुना था कि हिज़क़ियाह बीमार हो गया था।
13 इसलिए हिज़क़ियाह ने उनकी बातें सुनी, और उसने अपनी
बेशबहा चीज़ों का सारा घर, और चाँदी और सोना अपना
सिलाहख़ाना और जो कुछ उसके ख़ज़ानों में मौजूद था उनको

दिखाया; उसके घर में और उसकी सारी ममलुकत में ऐसी कोई
चीज़ न थी जो हिज़क़ियाह ने उनको न दिखाई।

14 तब यसा'याह नबी ने हिज़क़ियाह बादशाह के पास आकर
उसे कहा, "ये लोग क्या कहते थे? और ये तेरे पास कहाँ से आए?"
हिज़क़ियाह ने कहा, "ये दूर मुल्क से, या'नी बाबुल से आए हैं।"

15 फिर उसने पूछा, "उन्होंने तेरे घर में क्या देखा?"
हिज़क़ियाह ने जवाब दिया, "उन्होंने सब कुछ जो मेरे घर में है
देखा; मेरे ख़ज़ानों में ऐसी कोई चीज़ नहीं जो मैंने उनको दिखाई
न हो।"

16 तब यसा'याह ने हिज़क़ियाह से कहा, "ख़ुदावन्द का कलाम
सुन ले:

17 देख, वह दिन आते हैं कि सब कुछ जो तेरे घर में है, और
जो कुछ तेरे बाप — दादा ने आज के दिन तक जमा' करके रखा
है, बाबुल को ले जाएँगे; ख़ुदावन्द फ़रमाता है, कुछ भी बाक़ी न
रहेगा।

18 और वह तेरे बेटों में से जो तुझसे पैदा होंगे, और जिनका
बाप तू ही होगा ले जाएँगे, और वह बाबुल के बादशाह के महल
में ख़्वाजासरा होंगे।"

19 हिज़क़ियाह ने यसा'याह से कहा, "ख़ुदावन्द का कलाम जो
तू ने कहा है, भला है।" और उसने ये भी कहा, 'भला ही होगा,
अगर मेरे दिन में अमन और अमान रहे।

20 हिज़क़ियाह के बाक़ी काम और उसकी सारी क़ुव्वत, और
क्यूँकर उसने तालाब और नाली बनाकर शहर में पानी पहुँचाया;
इसलिए क्या वह शाहान — ए — यहूदाह की तवारीख़ की
किताब में लिखा नहीं?

21 और हिज़क़ियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
उसका बेटा मनस्सी उसकी जगह बादशाह हुआ।

21

[illegible]

1जब मनस्सी सल्तनत करने लगा तो बारह बरस का था, उसने
पचपन बरस येरूशलेम में सल्तनत की, और उसकी माँ का नाम
हिफ़सीबाह था।
2उसने उन क़ौमों के नफ़रती कामों की तरह जिनको ख़ुदावन्द
ने बनी इस्राईल के आगे से दफ़ा' किया, ख़ुदावन्द की नज़र में
गुनाह किया।
3 क्यूँकि उसने उन ऊँचे मक़ामों को जिनको उसके बाप
हिज़क़ियाह ने ढाया था फिर बनाया; और बा'ल के लिए —
मज़बह बनाए। और यसीरत बनाई जैसे शाह — ए — इस्राईल
अख़ीअब ने किया था; और आसमान की सारी फ़ौज को सिज्दा
करता और उनकी इबादत करता था।
4और उसने ख़ुदावन्द की हैकल में, जिसके ज़रिए' ख़ुदावन्द
ने फ़रमाया था, "मैं येरूशलेम में अपना नाम रख्खूँगा।" मज़बह
बनाए।
5और उसने आसमान की सारी फ़ौज के लिए ख़ुदावन्द की
हैकल के दोनों सहनों में मज़बह बनाए।
6और उसने अपने बेटे को आग में चलाया, और वह शगून
निकालता और अफ़सूँगरी करता, और जिन्नात के प्यारों और
जादूगरों से त'अल्लुक़ रखता था। उसने ख़ुदावन्द के आगे उसको
ग़ुस्सा दिलाने के लिए बड़ी शरारत की।
7और उसने यसीरत की खोदी हुई मूरत को, जिसे उसने बनाया
था, उस घर में खड़ा किया जिसके ज़रिए' ख़ुदावन्द ने दाऊद और
उसके बेटे सुलेमान से कहा था कि "इसी घर में और येरूशलेम में
जिसे मैंने बनी — इस्राईल के सब क़बीलों में से चुन लिया है, मैं
अपना नाम हमेशा तक रख्खूँगा
8और मैं ऐसा न करूँगा कि बनी — इस्राईल के पाँव उस मुल्क
से बाहर आवारा फिरें, जिसे मैंने उनके बाप — दादा को दिया,

बशर्ते कि वह उन सब हुक्म के मुताबिक़ और उस शरी'अत के
मुताबिक़, जिसका हुक्म मेरे बन्दे मूसा ने उनको दिया, 'अमल
करने की एहतियात रख्खें।"
9 लेकिन उन्होंने न माना, और मनस्सी ने उनको बहकाया कि
वह उन क़ौमों के बारे में, जिनको ख़ुदावन्द ने बनी — इस्राईल के
आगे से बर्बाद किया, ज़्यादा बदी करें।
10 इसलिए ख़ुदावन्द ने अपने बन्दों, नबियों के ज़रिए'
फ़रमाया,
11 "चूँकि बादशाह यहूदाह मनस्सी ने नफ़रती काम किए, और
अमोरियों की निस्बत जो उससे पहले हुए ज़्यादा बुराई की, और
यहूदाह से भी अपने बुतों के ज़रीए' से गुनाह कराया;
12 इसलिए ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: देखो,
मैं येरूशलेम और यहूदाह पर ऐसी बला लाने को हूँ कि जो कोई
उसका हाल सुने, उसके कान झन्ना उठेंगे।
13 और मैं येरूशलेम पर सामरिया की रस्सी, और अख़ीअब के
घराने का साहुल डालूँगा; और मैं येरूशलेम को ऐसा साफ़ करूँगा
जैसे आदमी थाली को साफ़ करता है और उसे साफ़कर के उल्टी
रख देता है।
14 और मैं अपनी मीरास के बाक़ी लोगों को तर्क करके, उनको
उनके दुश्मनों के हवाले करूँगा; और वह अपने सब दुश्मनों के
लिए शिकार और लूट ठहरेंगे।
15 क्यूँकि जब से उनके बाप — दादा मिस्र से निकले, उस दिन
से आज तक वह मेरे आगे बुराई करते और मुझे ग़ुस्सा दिलाते
रहे।"
16 'अलावा इसके मनस्सी ने उस गुनाह के 'अलावा कि उसने
यहूदाह को गुमराह करके ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह कराया,
बेगुनाहों का ख़ून भी इस क़दर किया कि येरूशलेम इस सिरे से
उस सिरे तक भर गया।

17 और मनस्सी के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया,
और वह गुनाह जो उससे सरज़द हुआ; इसलिए क्या वह बनी
यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं?
18 और मनस्सी अपने बाप दादा के साथ सो गया, और अपने
घर के बाग में जो 'उज़्ज़ा का बाग़ है दफ़न हुआ; और उसका बेटा
अमून उसकी जगह बादशाह हुआ।
19 और अमून जब सल्तनत करने लगा तो बाईस बरस का
था। उसने येरूशलेम में दो बरस सल्तनत की; उसकी माँ का नाम
मुसल्लिमत था, जो हरूस युतबही की बेटी थी।
20 और उसने ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया जैसे उसके
बाप मनस्सी ने की थी।
21 और वह अपने बाप के सब रास्तों पर चला, और उन बुतों
की इबादत की जिनकी इबादत उसके बाप ने की थी, और उनको
सिज्दा किया।
22 और उसने ख़ुदावन्द अपने बाप दादा के ख़ुदा को छोड़ दिया,
और ख़ुदावन्द की राह पर न चला।
23 और अमून के ख़ादिमों ने उसके ख़िलाफ़ साज़िश की, और
बादशाह को उसी के महल में जान से मार दिया।
24 लेकिन उस मुल्क के लोगों ने उन सबको, जिन्होंने अमून
बादशाह के ख़िलाफ़ साज़िश की थी क़त्ल किया। और मुल्क के
लोगों ने उसके बेटे यूसियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया।
25 अमून के बाक़ी काम जो उसने किए, इसलिए क्या वह
यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं?
26 और वह अपनी क़ब्र में 'उज़्ज़ा के बाग़ में दफ़न हुआ, और
उसका बेटा यूसियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

22

1 जब यूसियाह सल्तनत करने लगा, तो आठ बरस का था,
उसने इकतीस साल येरूशलेम में सल्तनत की। उसकी माँ का
नाम जदीदाह था, जो बुसकती 'अदायाह की बेटी थी।
2 उसने वह काम किए जो ख़ुदावन्द की नज़र में ठीक था, और
अपने बाप दाऊद की सब राहों पर चला और दहने या बाएँ हाथ
को न मुड़ा।
3 और यूसियाह बादशाह के अठारहवें बरस ऐसा हुआ कि
बादशाह ने साफ़न — बिन असलियाह — बिन — मसुल्लाम
मुन्शी को ख़ुदावन्द के घर भेजा और कहा,
4 “तू ख़िलक़ियाह सरदार काहिन के पास जा, ताकि वह उस
नक़दी को जो ख़ुदावन्द के घर में लाई जाती है, और जिसे दरबानों
ने लोगों से लेकर जमा' किया है गिने,
5 और वह उसे उन कारगुज़ारों को सौंप दे जो ख़ुदावन्द के
घर की निगरानी रखते हैं; और ये लोग उसे उन कारीगरों को दें
जो ख़ुदावन्द के घर में काम करते हैं, ताकि हैकल की दरारों की
मरम्मत हो;
6 या'नी बढ़इयों और बादशाहों और मिस्त्रियों को दें, और
हैकल की मरम्मत के लिए लकड़ी और तराशे हुए पत्थरों के
ख़रीदने पर ख़र्च करें।
7 लेकिन उनसे उस नक़दी का जो उनके हाथ में दी जाती थी,
कोई हिसाब नहीं लिया जाता था, इसलिए कि वह अमानत दारी
से काम करते थे।
8 और सरदार काहिन ख़िलक़ियाह ने साफ़न मुन्शी से कहा,
मुझे ख़ुदावन्द के घर में तौरेत की किताब मिली है।” और
ख़िलक़ियाह ने किताब साफ़न को दी और उसने उसको पढ़ा।
9 और साफ़न मुन्शी बादशाह के पास आया और बादशाह
को ख़बर दी कि “तेरे ख़ादिमों ने वह नक़दी जो हैकल में मिली,
लेकर उन कारगुज़ारों के हाथ में सुपुर्द की जो ख़ुदावन्द के घर की
निगरानी रखते हैं।”

10 और साफ़न मुन्शी ने बादशाह को ये भी बताया,
“ख़िलक़ियाह काहिन ने एक किताब मेरे हवाले की है।” और
साफ़न ने उसे बादशाह के सामने पढ़ा।
11 जब बादशाह ने तौरेत की किताब की बातें सुनीं, तो अपने
कपड़े फाड़े;
12 और बादशाह ने ख़िलक़ियाह काहिन, और साफ़न के
बेटे अख़ीक़ाम, और मीकायाह के 'अकबूर और साफ़न मुन्शी
असायाह को जो बादशाह का मुलाज़िम था ये हुक्म दिया,
13 कि “ये किताब जो मिली है, इसकी बातों के बारे में तुम
जाकर मेरी और सब लोगों और सारे यहूदाह की तरफ़ से ख़ुदावन्द
से दरियाफ़्त करो; क्यूँकि ख़ुदावन्द का बड़ा ग़ज़ब हम पर इसी
वजह से भड़का है कि हमारे बाप — दादा ने इस किताब की
बातों को न सुना, कि जो कुछ उसमें हमारे बारे में लिखा है उसके
मुताबिक़ 'अमल करते।”
14 तब ख़िलक़ियाह, काहिन और' अख़ीक़ाम और अकबूर और
साफन असायाह ख़ुल्दा नबिया के पास गए, जो तोशाख़ाने के
दरोग़ा सलूम बिन तिक़वा बिन ख़रख़स की बीवी थी, ये येरूशलेम
में मिशना नामी महल्ले में रहती थी इसलिए उन्होंने उससे
गुफ़्तगू की।
15 उसने उनसे कहा, “ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा यूँ फ़रमाता
है, 'तुम उस शख़्स से जिसने तुम को मेरे पास भेजा है कहना,
16 कि ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मैं इस किताब की उन सब
बातों के मुताबिक़, जिनको शाह — ए — यहूदाह ने पढ़ा है, इस
मक़ाम पर और इसके सब बाशिन्दों पर बला नाज़िल करूँगा।
17 क्यूँकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और ग़ैर — मा'बूदों के आगे
ख़ुशबू जलाया, ताकि अपने हाथों के सब कामों से मुझे ग़ुस्सा
दिलाएँ, इसलिए मेरा क़हर इस मक़ाम पर भड़केगा और ठण्डा
न होगा।

18 लेकिन शाह — ए — यहूदाह से जिसने तुम को ख़ुदावन्द
से दरियाफ़्त करने को भेजा है, यूँ कहना कि ख़ुदावन्द इस्राईल
का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है कि जो बातें तू ने सुनीं हैं उनके बारे में यह
हैं कि;
19 चूँकि तेरा दिल नर्म है, और जब तू ने वह बात सुनी जो
मैंने इस मक़ाम और इसके बशिन्दों के हक़ में कही कि वह तबाह
हो जाएँगे और ला'नती भी ठहरेंगे, तो तू ने ख़ुदावन्द के आगे
'आजिज़ी की और अपने कपड़े फाड़े और मेरे आगे रोया; इसलिए
मैंने भी तेरी सुन ली, ख़ुदावन्द फ़रमाता है।
20 इसलिए देख मैं तुझे तेरे बाप — दादा के साथ मिला दूँगा,
और तू अपनी क़ब्र में सलामती से उतार दिया जाएगा, और उन
सब आफ़तों को जो मैं इस मक़ाम पर नाज़िल करूँगा, तेरी आँखें
नहीं देखेंगी।" इसलिए वह यह ख़बर बादशाह के पास लाए।

23

□□□□'□ □□ □□□□□□□ □□□□□□

1 और बादशाह ने लोग भेजे, और उन्होंने यहूदाह और
येरूशलेम के सब बुज़ुर्गों को उसके पास जमा' किया।
2 और बादशाह ख़ुदावन्द के घर को गया, और उसके साथ
यहूदाह के सब लोग, और येरूशलेम के सब बाशिन्दे, और
काहिन, और नबी, और सब छोटे बड़े आदमी थे, और उसने जो
'अहद की किताब ख़ुदावन्द के घर में मिली थी, उसकी सब बातें
उनको पढ़ सुनाई।
3 और बादशाह सुतून के बराबर खड़ा हुआ, और उसने ख़ुदावन्द
की पैरवी करने और उसके हुक्मों और शहादतों और तौर तरीक़े
को अपने सारे दिल और सारी जान से मानने, और इस 'अहद
की बातों पर जो उस किताब में लिखी हैं 'अमल करने के लिए

ख़ुदावन्द के सामने 'अहद बाँधा, और सब लोग उस 'अहद पर क़ायम हुए।

4 फिर बादशाह ने सरदार काहिन ख़िलक़ियाह को, और उन काहिनों को जो दूसरे दर्जे के थे, और दरबानों को हुक्म किया कि उन सब बर्तनों को जो बा'ल और यसीरत और आसमान की सारी फ़ौज के लिए बनाए गए थे, ख़ुदावन्द की हैकल से बाहर निकालें, और उसने येरूशलेम के बाहर क़िद्रोन के खेतों में उनको जला दिया और उनकी राख बैतएल पहुँचाई।

5 और उसने उन बुत परस्त काहिनों को, जिनको शाहान — ए — यहूदाह ने यहूदाह के शहरों के ऊँचे मक़ामों और येरूशलेम के आस — पास के मक़ामों में ख़ुशबू जलाने को मुक़र्रर किया था, और उनको भी जो बा'ल और चाँद और सूरज और सय्यारे और आसमान के सारे लश्कर के लिए ख़ुशबू जलाते थे, मौक़ूफ़ किया।

6 और वह यसीरत को ख़ुदावन्द के घर से येरूशलेम के बाहर क़िद्रोन के नाले पर ले गया, और उसे क़िद्रोन के नाले पर जला दिया और उसे कूट कूटकर ख़ाक बना दिया और उसे 'आम लोगों की क़ब्रों पर फेंक दिया।

7 उसने लूतियों के मकानों को जो ख़ुदावन्द के घर में थे, जिनमें 'औरतें यसीरत के लिए पर्दे बुना करती थीं, ढा दिया।

8 और उसने यहूदाह के शहरों से सब काहिनों को लाकर, जिबा' से बैरसबा' तक उन सब ऊँचे मक़ामों में जहाँ काहिनों ने ख़ुशबू जलाया था, नजासत डलवाई; और उसने फाटकों के उन ऊँचे मक़ामों को जो शहर के नाज़िम यशू'आ के फाटक के मदख़ल, या'नी शहर के फाटक के बाएँ हाथ को थे, गिरा दिया।

9 तोभी ऊँचे मक़ामों के काहिन येरूशलेम में ख़ुदावन्द के मज़बह के पास न आए, लेकिन वह अपने भाइयों के साथ बेख़मीरी रोटी खा लेते थे।

10 और उसने तूफ़त में जो बनी — हिन्नूम की वादी में है,

नजासत फिंकवाई ताकि कोई शख़्स मोलक के लिए अपने बेटे
या बेटी को आग में न जला सके।
11 और उसने उन घोड़ों को दूर कर दिया जिनको यहूदाह के
बादशाहों ने सूरज के लिए मख़्सूस करके ख़ुदावन्द के घर के
आसताने पर, नातन मलिक ख़्वाजासरा की कोठरी के बराबर
रख्खा था जो हैकल की हद के अन्दर थी, और सूरज के रथों को
आग से जला दिया।
12 और उन मज़बहों को जो आख़ज़ के बालाख़ाने की छत
पर थे, जिनको शाहान — ए — यहूदाह ने बनाया था और उन
मज़बहों को जिनको मनस्सी ने ख़ुदावन्द के घर के दोनों सहनों में
बनाया था, बादशाह ने ढा दिया और वहाँ से उनको चूर — चूर
करके उनकी ख़ाक को क़िद्रोन के नाले में फिकवा दिया।
13 और बादशाह ने उन ऊँचे मक़ामों पर नजासत डलवाई
जो येरूशलेम के मुक़ाबिल कोह — ए — आलायश की दहनी
तरफ़ थे, जिनको इस्राईल के बादशाह सुलेमान ने सैदानियों की
नफ़रती 'अस्तारात और मोआबियों, के नफ़रती कमूस और बनी
'अम्मोंन के नफरती मिल्कोम के लिए बनाया था।
14 और उसने सुतूनों को टुकड़े — टुकड़े कर दिया और यसीरतों
को काट डाला, और उनकी जगह में मुर्दों की हड्डियाँ भर दीं।
15 फिर बैतएल का वह मज़बह और वह ऊँचा मक़ाम जिसे
नबात के बेटे युरब'आम ने बनाया था, जिसने इस्राईल से गुनाह
कराया, इसलिए इस मज़बह और ऊँचे मक़ाम दोनों को उसने ढा
दिया, और ऊँचे मक़ाम को जला दिया और उसे कूट — कूटकर
ख़ाक कर दिया, और यसीरत को जला दिया।
16 और जब यूसियाह मुड़ा तो उसने उन क़ब्रों को देखा जो
वहाँ उस पहाड़ पर थीं, इसलिए उसने लोग भेज कर उन क़ब्रों में
से हड्डियाँ निकलवाई, और उनको उस मज़बह पर जलाकर उसे
नापाक किया। ये ख़ुदावन्द के सुख़न के मुताबिक़ हुआ, जिसे उस

मर्द — ए — ख़ुदा ने जिसने इन बातों की ख़बर दी थी सुनाया
था।
17 फिर उसने पूछा, "ये कैसी यादगार है जिसे मैं देखता हूँ?"
शहर के लोगों ने उसे बताया, "ये उस मर्द — ए — ख़ुदा की क़ब्र
है, जिसने यहूदाह से आकर इन कामों की जो तू ने बैतएल के
मज़बह से किए, ख़बर दी।"
18 तब उसने कहा, "उसे रहने दो, कोई उसकी हड्डियों को न
सरकाए।" इसलिए उन्होंने उसकी हडिडयाँ उस नबी की हड्डियों
के साथ जो सामरिया से आया था रहने दीं।
19 और यूसियाह ने उन ऊँचे मक़ामों के सब घरों को भी
जो सामरिया के शहरों में थे, जिनको इस्राईल के बादशाहों ने
ख़ुदावन्द को ग़ुस्सा दिलाने को बनाया था ढाया, और जैसा उसने
बैतएल में किया था वैसा ही उनसे भी किया।
20 और उसने ऊँचे मक़ामों के सब काहिनों को जो वहाँ थे, उन
मज़बहों पर क़त्ल किया और आदमियों की हड्डियाँ उन पर जलाई;
फिर वह येरूशलेम को लौट आया।
21 और बादशाह ने सब लोगों को ये हुक्म दिया, कि "ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा के लिए फ़सह मनाओ, जैसा 'अहद की इस किताब
में लिखा है।"
22 और यक़ीनन क़ाज़ियों के ज़माने से जो इस्राईल की
'अदालत करते थे, और इस्राईल के बादशाहों और यहूदाह के
बादशाहों के कुल दिनों में ऐसी 'ईद — ए — फ़सह कभी नहीं हुई
थी।
23 यूसियाह बादशाह के अठारहवें बरस ये फ़सह येरूशलेम में
ख़ुदावन्द के लिए मनाई गई।
24 इसके सिवा यूसियाह ने जिन्नात के यारों और जादूगरों और
मूरतों और बुतों, और सब नफ़रती चीज़ों को जो मुल्क — ए —
यहूदाह और येरूशलेम में नज़र आई दूर कर दिया, ताकि वह

शरी'अत की उन बातों को पूरा करे जो उस किताब में लिखी थी,
जो ख़िलक़ियाह काहिन को ख़ुदावन्द के घर में मिली थी।
25 उससे पहले कोई बादशाह उसकी तरह नहीं हुआ था, जो
अपने सारे दिल और अपनी सारी जान और अपने सारे ज़ोर से
मूसा की सारी शरी'अत के मुताबिक़ ख़ुदावन्द की तरफ़ रुजू'
लाया हो; और न उसके बाद कोई उसकी तरह खड़ा हुआ।
26 बावजूद इसके मनस्सी की सब बदकारियों की वजह से,
जिनसे उसने ख़ुदावन्द को ग़ुस्सा दिलाया था, ख़ुदावन्द अपने
सख़्त — ओ — शदीद क़हर से, जिससे उसका ग़ज़ब यहूदाह पर
भड़का था, बाज़ न आया।
27 और ख़ुदावन्द ने फ़रमाया, कि "मैं यहूदाह को भी अपनी
आँखों के सामने से दूर करूँगा, जैसे मैंने इस्राईल को दूर किया;
और मैं इस शहर को जिसे मैंने चुना या'नी येरूशलेम को, और
इस घर को जिसके ज़रिए' मैंने कहा था की मेरा नाम वहाँ होगा
रद्द कर दूँगा"
28 और यूसियाह के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया,
इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब
में लिखे नहीं?
29 उसी के अय्याम में शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन निकोह
शाह — ए — असूर पर चढ़ाई करने के लिए दरिया — ए —
फ़रात को गया था; और यूसियाह बादशाह उसका सामना करने
को निकला, इसलिए उसने उसे देखते ही मजिद्दो में क़त्ल कर
दिया।
30 और उसके मुलाज़िम उसको एक रथ में मजिद्दो से मरा हुआ
ले गए, और उसे येरूशलेम में लाकर उसी की क़ब्र में दफ़्न किया।
और उस मुल्क के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूआख़ज़ को लेकर
उसे मसह किया, और उसके बाप की जगह उसे बादशाह बनाया।
31 और यहूआख़ज़ जब सल्तनत करने लगा तो तेईस साल का

था, उसने येरूशलेम में तीन महीने सल्तनत की। उसकी माँ का
नाम हमूतल था, जो लिबनाही यरमियाह की बेटी थी।
32 और जो — जो उसके बाप — दादा ने किया था उसके
मुताबिक़ इसने भी ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया।
33 इसलिए फ़िर'औन निकोह ने उसे रिबला में, जो मुल्क — ए
— हमात में है, क़ैद कर दिया ताकि वह येरूशलेम में सल्तनत न
करने पाए; और उस मुल्क पर सौ क़िन्तार चाँदी और एक क़िन्तार
सोना ख़िराज मुक़र्रर किया।
34 और फ़िर'औन निकोह ने यूसियाह के बेटे इलियाक़ीम को
उसके बाप यूसियाह की जगह बादशाह बनाया, और उसका नाम
बदलकर यहूयक़ीम रखा, लेकिन यहूआख़ज़ को ले गया, इसलिए
वह मिस्र में आकर वहाँ मर गया।
35 यहूयक़ीम ने वह चाँदी और सोना फ़िर'औन को पहुँचाया,
पर इस नक़दी को फ़िर'औन के हुक्म के मुताबिक़ देने के लिए
उसने ममलुकत पर ख़िराज मुक़र्रर किया; या'नी उसने उस मुल्क
के लोगों से हर शख़्स के लगान के मुताबिक़ चाँदी और सोना
लिया ताकि फ़िर'औन निकोह को दे।
36 यहूयक़ीम जब सल्तनत करने लगा, तो पच्चीस बरस का
था, उसने येरूशलेम में ग्यारह बरस सल्तनत की। उसकी माँ का
नाम ज़बूदा था, जो रूमाह के फ़िदायाह की बेटी थी।
37 और जो — जो उसके बाप — दादा ने किया था, उसी के
मुताबिक़ उसने भी ख़ुदावन्द की नज़र में बुराई की।

24

1 उसी के दिनों में शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने चढ़ाई
की और यहूयक़ीम तीन बरस तक उसका ख़ादिम रहा तब वह फिर
कर उससे मुड़ गया।
2 और ख़ुदावन्द ने कसदियों के दल, और अराम के दल, और
मोआब के दल, और बनी 'अम्मोन के दल उस पर भेजे, और

यहूदाह पर भी भेजे ताकि उसे जैसा ख़ुदावन्द ने अपने बन्दों
नबियों के ज़रिए' फ़रमाया था हलाक कर दे।
3 यक़ीनन ख़ुदावन्द ही के हुक्म से यहूदाह पर यह सब कुछ
हुआ, ताकि मनस्सी के सब गुनाहों के ज़रिए' जो उसने किए,
उनको अपनी नज़र से दूर करे
4 और उन सब बेगुनाहों के ख़ून के ज़रिए' भी जिसे मनस्सी ने
बहाया; क्यूँकि उसने येरूशलेम को बेगुनाहों के ख़ून से भर दिया
था और ख़ुदावन्द ने मु'आफ़ करना न चाहा।
5 यहूयक़ीम के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया,
इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब
में लिखा नहीं?
6 और यहूयक़ीम अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और
उसका बेटा यहूयाकीन उसकी जगह बादशाह हुआ।
7 और शाह — ए — मिस्र फिर कभी अपने मुल्क से बाहर न
गया; क्यूँकि शाह — ए — बाबुल ने मिस्र के नाले से दरिया — ए
— फ़रात तक सब कुछ जो शाह — ए — मिस्र का था ले लिया
था।

[illegible]

8 यहूयाकीन जब सल्तनत करने लगा तो अठारह बरस का था,
और येरूशलेम में उसने तीन महीने सल्तनत की। उसकी माँ का
नाम नहुशता था, जो येरूशलेमी इलनातन की बेटी थी।
9 और जो — जो उसके बाप ने किया था उसके मुताबिक़ उसने
भी ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया।
10 उस वक़्त शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के ख़ादिमों ने
येरूशलेम पर चढ़ाई की और शहर को घेर लिया।
11 और शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र भी, जब उसके
ख़ादिमों ने उस शहर को घेर रक्खा था, वहाँ आया।

12 तब शाह — ए — यहूदाह यहूयाकीन अपनी माँ और और अपने मुलाज़िमों और सरदारों और 'उहदादारों साथ निकल कर शाह — ए — बाबुल के पास गया, और शाह — ए — बाबुल ने अपनी सल्तनत के आठवें बरस उसे गिरफ़्तार किया।

13 और वह ख़ुदावन्द के घर के सब ख़ज़ानों और शाही महल के सब ख़ज़ानों को वहाँ से ले गया, और सोने के सब बर्तनों को जिनको शाह — ए — इस्राईल सुलेमान ने ख़ुदावन्द की हैकल में बनाया था, उसने काट कर ख़ुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ उनके टुकड़े — टुकड़े कर दिए।

14 और वह सारे येरूशलेम को और सब सरदारों और सब सूर्माओं को, जो दस हज़ार आदमी थे, और सब कारीगरों और लुहारों को ग़ुलाम करके ले गया; इसलिए वहाँ मुल्क के लोगों में से सिवा कंगालों के और कोई बाक़ी न रहा।

15 और यहूयाकीन को वह बाबुल ले गया, और बादशाह की माँ और बादशाह की बीवियों और उसके 'उहदे दारों और मुल्क के रईसों को वह ग़ुलाम करके येरूशलेम से बाबुल को ले गया।

16 और सब ताक़तवर आदमियों को जो सात हज़ार थे, और कारीगरों और लुहारों को जो एक हज़ार थे, और सब के सब मज़बूत और जंग के लायक़ थे; शाह — ए — बाबुल ग़ुलाम करके बाबुल में ले आया

17 और शाह — ए — बाबुल ने उसके बाप के भाई मत्तनियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया और उसका नाम बदलकर सिदक़ियाह रखा।

[illegible]

18 जब सिदक़ियाह सल्तनत करने लगा तो इक्कीस बरस का था, और उसने ग्यारह बरस येरूशलेम में सल्तनत की। उसकी माँ का नाम हमूतल था, जो लिबनाही यर्मियाह की बेटी थी।

19 और जो — जो यहू यक़ीम ने किया था उसी के मुताबिक़
उसने भी ख़ुदावन्द की नज़र में गुनाह किया।
20 क्यूँकि ख़ुदावन्द के ग़ज़ब की वजह से येरूशलेम और
यहूदाह की ये नौबत आई, कि आख़िर उसने उनको अपने सामने
से दूर ही कर दिया; और सिदक़ियाह शाह — ए — बाबुल से फिर
गया।

25

1 और उसकी सल्तनत के नौवें बरस के दसवें महीने के दसवें
दिन, यूँ हुआ कि शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने अपनी
सारी फ़ौज के साथ येरूशलेम पर चढ़ाई की, और उसके सामने
ख़ैमाज़न हुआ, और उन्होंने उसके सामने चारों तरफ़ घेराबन्दी
की।
2 और सिदक़ियाह बादशाह की सल्तनत के ग्यारहवें बरस तक
शहर का मुहासिरा रहा।
3 चौथे महीने के नौवें दिन से शहर में काल ऐसा सख़्त हो गया,
कि मुल्क के लोगों के लिए कुछ खाने को न रहा।
4 तब शहर पनाह में सुराख़ हो गया, और दोनों दीवारों के बीच
जो फाटक शाही बाग़ के बराबर था, उससे सब जंगी मर्द रात ही
रात भाग गए, उस वक़्त कसदी शहर को घेरे हुए थे और बादशाह
ने वीराने का रास्ता लिया।
5 लेकिन कसदियों की फ़ौज ने बादशाह का पीछा किया और
उसे यरीहू के मैदान में जा लिया, और उसका सारा लश्कर उसके
पास से तितर बितर हो गया था।
6 इसलिए वह बादशाह को पकड़ कर रिबला में शाह — ए —
बाबुल के पास ले गए, और उन्होंने उस पर फ़तवा दिया।
7 और उन्होंने सिदक़ियाह के बेटों को उसकी आँखों के सामने
ज़बह किया और सिदक़ियाह की आँखें निकाल डालीं और उसे
ज़ँजीरों से जकड़कर बाबुल को ले गए।

[illegible]

8 और शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के 'अहद के उन्नीसवें
साल के पाँचवें महीने के सातवें दिन, शाह — ए — बाबुल का
एक ख़ादिम नबूज़रादान जो जिलौदारों का सरदार था येरूशलेम
में आया।
9 और उसने ख़ुदावन्द का घर और बादशाह का महल
येरूशलेम के सब घर, या'नी हर एक बड़ा घर आग से जला दिया।
10 और कसदियों के सारे लश्कर ने जो जिलौदारों के सरदार के
साथ थे, येरूशलेम की फ़सील को चारों तरफ़ से गिरा दिया।
11 और बाक़ी लोगों को जो शहर में रह गए थे, और उनको
जिन्होंने अपनों को छोड़ कर शाह — ए — बाबुल की पनाह
ली थी, और 'अवाम में से जितने बाक़ी रह गए थे, उन सबको
नबूज़रादान जिलौदारों का सरदार क़ैद करके ले गया।
12 पर जिलौदारों के सरदार ने मुल्क के कंगालों को रहने दिया,
ताकि खेती और बाग़ों की बाग़बानी करें।
13 और पीतल के उन सुतूनों को जो ख़ुदावन्द के घर में थे, और
कुर्सियों को और पीतल के बड़े हौज़ को, जो ख़ुदावन्द के घर में
था, कसदियों ने तोड़ कर टुकड़े — टुकड़े किया और उनका पीतल
बाबुल को ले गए।
14 और तमाम देगें और बेल्चे और गुलगीर और चम्चे, और
पीतल के तमाम बर्तन जो वहाँ काम आते थे ले गए।
15 और अंगीठियाँ और कटोरे, ग़रज़ जो कुछ सोने का था उसके
सोने को, और जो कुछ चाँदी का था उसकी चाँदी को, जिलौदारों
का सरदार ले गया।
16 और दोनों सुतून और वह बड़ा हौज़ और वह कुर्सियाँ,
जिनको सुलेमान ने ख़ुदावन्द के घर के लिए बनाया था, इन सब
चीज़ों के पीतल का वज़न बेहिसाब था।
17 एक सुतून अठारह हाथ ऊँचा था, और उसके ऊपर पीतल
का एक ताज था और वह ताज तीन हाथ बलन्द था; उस ताज पर

चारों तरफ़ जालियाँ और अनार की कलियाँ, सब पीतल की बनी
हुई थीं; और दूसरे सुतून के लवाज़िम भी जाली समेत इन्हीं की
तरह थे।
18 जिलौदारों के सरदार ने सिरायाह सरदार काहिन को और
काहिन — ए — सानी सफ़नियाह को और तीनों दरबानों को पकड़
लिया;
19 और उसने शहर में से एक सरदार को पकड़ लिया जो जंगी
मर्दों पर मुक़र्रर था, और जो लोग बादशाह के सामने हाज़िर रहते
थे उनमें से पाँच आदमियों को जो शहर में मिले, और लश्कर के
बड़े मुहर्रिर को जो अहल — ए — मुल्क की मौजूदात लेता था,
और मुल्क के लोगों में से साठ आदमियों को जो शहर में मिले।
20 इनको जिलौदारों का सरदार नबूज़रादान पकड़ कर शाह —
ए — बाबुल के सामने रिबला में ले गया।
21 और शाह — ए — बाबुल ने हमात के 'इलाक़े के रिबला में
इनको मारा और क़त्ल किया। इसलिए यहूदाह भी अपने मुल्क
से ग़ुलाम होकर चला गया।
22 जो लोग यहूदाह की सर ज़मीन में रह गए, जिनको
नबूकदनज़र शाह — ए — बाबुल ने छोड़ दिया, उन पर उसने
जिदलियाह — बिन अख़ीक़ाम — बिन साफ़न को हाकिम मुक़र्रर
किया।
23 जब लश्करों के सब सरदारों और उनकी सिपाह ने, या'नी
इस्माईल — बिन — नतनियाह और यूहनान बिन क़रीह और
सिरायाह बिन ताख़ूमत नातूफ़ाती और याजनियाह बिन मा'काती
ने सुना कि शाह — ए — बाबुल ने जिदलियाह को हाकिम बनाया
है, तो वह अपने लोगों समेत मिस्फ़ाह में जिदलियाह के पास
आए।
24 जिदलियाह ने उनसे और उनकी सिपाह से क़सम खाकर
कहा, “कसदियों के मुलाज़िमों से मत डरो; मुल्क में बसे रहो
और शाह — ए — बाबुल की ख़िदमत करो और तुम्हारी भलाई

होगी।”
25 मगर सातवें महीने ऐसा हुआ कि इस्माईल — बिन —
नतनियाह — बिन — इलीसमा' जो बादशाह की नस्ल से था,
अपने साथ दस मर्द लेकर आया और जिदलियाह को ऐसा मारा
कि वह मर गया; और उन यहूदियों और कसदियों को भी जो उसके
साथ मिस्फ़ाह में थे क़त्ल किया।
26 तब सब लोग, क्या छोटे क्या बड़े और लोगों के सरदार उठ
कर मिस्र को चले गए क्यूँकि वह कसदियों से डरते थे।
27 और यहूयाकीन शाह — ए — यहूदाह की ग़ुलामी के
सैंतीसवें साल के बारहवें महीने के सत्ताइसवें दिन ऐसा हुआ, कि
शाह — ए — बाबुल ईवील मरदूक़ ने अपनी सल्तनत के पहले
ही साल यहूयाकीन शाह — ए — यहूदाह को क़ैदख़ाने से निकाल
कर सरफ़राज़ किया;
28 और उसके साथ मेहरबानी से बातें कीं, और उसकी कुर्सी उन
सब बादशाहों की कुर्सियों से जो उसके साथ बाबुल में थे बलन्द
की।
29 इसलिए वह अपने क़ैदख़ाने के कपड़े बदलकर उम्र भर
बराबर उसके सामने खाना खाता रहा;
30 और उसको उम्र भर बादशाह की तरफ़ से वज़ीफ़े के तौर पर
हर रोज़ ख़र्चा मिलता रहा।

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.
You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.
Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023
4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc